चला गया, अब मेरा बोझ कौन उठायेगा ? तू मुझे थोड़ी सी अफीम लादे, खाकर सो रहूं।

मैकू—अरे राम राम ! तू पगलाय गइऊ का ?

मोहिनी—कहां जाऊं मैकू, जानेमे भी तो खर्च है और हाथ एकदम खाली है।

मैकू—ओकर फिकर जिन करा। अजुध्याजीमें हमार फूफा रहत होवै, तुमका होईं ले चलब। थोड़-बहुत जौन इकट्ठा किये हौं, ओहीसे एक ठो कपड़ाकी दुकान कै लेब। हमार तो न आगे नाथ न पाछे पगहा। जौन आमदनी होई, मतारी-बेटवाकी तरह गुजर करब और भगवान रामचन्द्रका भजन गाउब। ऐसनै दिन कट जाई। आगे तुम्हार मर्जी !

मोहिनी—(रोकर) मैकू-मैकू, तू मेरा नौकर नहीं, मेरा बाप है। तुझको मैंने कभी कुछ नहीं दिया, गधेकी तरह दिन-रात खटाती ही रही। फिर भी मेरे लिये तेरे हृदयमें इतनी ममता, इतनी दया है।

मैकू—बीबी, बतियायका बखत नाही होवै। तुम्हार हम नमक खाये रहे। तू हमार मलकिन हौ और मालिक मतारी-बापके समान होत होवै। मैकू जब लौं जिन्दा रही, तुमका रत्ती भर तकलीफ न होय पाई। दुई-चार ठो कपड़ा ले ला. बस।

मोहिनी—मैकू, मेरे गहनोंका बक्स डाकू उठा ले गये। अगर होता तो किस बातकी कमी थी!

मैकू—गहना तो रहत जरूर! मुदा रामचन्दर भगवान न मिलते। चलो, छोड़ो ई सब सोच-फिकर। भगवान जौन करत हैं अच्छे ही। कलकत्ताका मारो झाड़ू। अरे बापरे! कितना बड़ो जमानो! धत्तेरे कलकत्ताकी ऐसी तैसी!

मोहिनी—मेरा इस मुसाफिरीके बीच कोई झाँकने तक नहीं आया। [illegible] इस जन्ममें जरूर मेरा कोई था।

[illegible] चलो जल्दीसे। कल-[illegible] (नमस्कार करना) [illegible]

नवम दृश्य

पर महाशय, आप कृपा कर इस समय यहांसे चल दीजिये। परसो मालिककी शादी हो जानेके बाद दर्शन दीजियेगा। शायद कुछ भेट-पूजा हो जाय।

केशव—महाशय, न तो मैं चन्दा-डकार हूं और न उसका रोज़गार ही करता हू। मैं आपके सेठ साहबसे दो बातें करने आया हूं।

सुद्ध—बाते-बाते नही हो सकती जी, एक बार कह दिया, सुना नही? सवेरे-सवेरे तुम आवारोंका मुंह देखकर वे दिन भरकी साइत खराब करें?

केशव—आप तो ऐसे बिगड रहे हैं, मानो आप ही इस घरके खुद-मुख्तार हैं। आप हैं कौन जरा सुनूं तो?

सुद्ध—तुम्हारी तरह कलके लौंडे मुझे क्या पहचानेगे। बचन्नू महराजका नाम सुना है, जिन्होने बिरधीचन्द सेठका छठॉ ब्याह कराकर पचास हजार नकद पैदा किया था। उसी महा वंशमे मेरा जन्म है।

केशव—अच्छा, तबतो बड़ा पुण्य कमाया था। सेठ साहबकी उमर क्या थी?

सुद्ध—बिरधीचन्द सेठकी? उनकी उमर थी नब्बे बरस की। कोई अपनी लडकी ही नहीं देना चाहता था और हमारे स्वनाम धन्य बचन्नू महराजने प्रण किया था कि मैंने भी तो ब्याह कराऊंगा। आखिर उन्होंने ब्याह करा कर ही दम लिया। वे क्या ऐसे-वैसे आदमी थे!

हु०—अच्छा अब कृपा कर तुम भी यह देश त्यागकर यहांके निवासियोंको शान्ति प्रदान करो।

केशव—जिस सर्पके मस्तकपर मणि रहता है वह यह नहीं जानता कि उसके सिरपर क्या है। रास्तेमें चलनेवाले लोग उसका प्रकाश देख पाते हैं। आज मैं आपके सेठ साहब को बता देने आया हू कि वे अब मणि-हीन फणि हैं। (कामताप्रसाद और रामनाथका प्रवेश) क्या आप ही सेठ कामताप्रसाद है?

कामता०—मैंने तुम्हारी बाते सुनी है! तुम्हारा प्रहार इतना तीव्र था कि मैं सहन नहीं कर सका। ललिता घर छोड़कर क्यो चली गई? मैंने तो मुनीमजीसे कहला दिया था कि वह यहीं आकर आरामसे रहे। हॉ, उस पाजी लौण्डे रामकिशोरको जरूर घरमे न घुसने देनेकी बात कही थी। ललिताको तो कुछ नहीं कहा था, वह क्यों चली गई।

केशव—आपने हृदयके दरवाजेको चलनका ताला लगाकर बन्द भी कर रक्खा था। वह बिचारी अपने कोमल हाथोंसे उसे तोड़कर भीतर नहीं आ सकी, इसीसे लौट गई। अब आप निश्चिन्त होकर शादी कीजिये। धिक्कार है आप को! आपकी कन्या गली-गलीकी ठोकरें खाती फिरती है और आप ज़री पाडकी चुनी हुई धोती पहिनते हैं? (ललिताकी फटी साड़ी कामताप्रसादके आगे फेंककर) यह

दशम दृश्य

[स्थान—शहरके बाहरका एक बगीचा]

ललिता—महाराजजी कह गये थे कि आते ही कोई भेजूंगा, पर अभीतक नहीं आई। ऐसी अन्धेरी सुनसान रातमें, गंगाके किनारे इस निर्जन स्थानमें, जहाँ कि किसीके चलने-फिरने या खांसने-खखारने तककी आवाज नहीं आती, कबतक अकेली रहूं? कहीं किसीने धोखा तो नहीं दिया—यहां तो कोई अपना परिचित भी नहीं है पर चेकपर तो साफ उनका नाम लिखा था। हे भगवान! इसमें कोई रहस्य तो नहीं है! हैं, अबतक कोई नहीं आया।

(गौरीनाथका प्रवेश)

गौरीनाथ—गुलाम हाजिर है।

जा—जहां तेरे ही जैसे पशुओंके अत्याचारोंके कारण, एक दो नहीं, लाखों अभागिनी बहनें, आज पैसों-पैसोंपर अपना रूप और यौवन बेंच-बेंचकर हिन्दू-समाजकी शोभा बढ़ा रही हैं ! खबरदार, आगे न बढ़ना। मैं कोई बाज़ारू वेश्या नहीं हूं जो तेरी लालचमें आकर अपना धर्म नष्ट कर दूंगी। मैं पतिव्रता नारी हूं और पतिव्रता स्त्री सिवा पतिके, पर-पुरुषका ध्यान करना भी पाप समझती है।

गौरी—ललिता एक बार फिर कहता हूं मेरा कहना मान ले, इसी मे तेरी भलाई है। तेरी जैसी कितनी ही पतिव्रताओंको मैंने ठिकाने लगा दिया है।

ललिता—दुरात्मा, यह धमकियां किसी औरको देना। मैं तेरी इन बंदर-घुड़कियोंसे नहीं डरती। रुपयोंका लालच देकर मेरे पतिका सर्वनाश किया, अब मेरा सर्वनाश करना चाहता है ? भारतकी सती स्त्रियोंका पातिव्रत-धर्म इतना सस्ता नहीं है, जो तुझ जैसे कुत्तोंके भूकनेपर नष्ट हो जायगा। मैं तुझ जैसे शैतानकी बात माननेकी बजाय मर जाना हजार दर्जे अच्छा समझती हूं।

गौरी—देखो ललिता मुझे क्रोध न दिलाओ, मेरे हाथोंसे तुझे कोई नहीं बचा सकता।

ललिता—मेरी रक्षा करनेवाला तुझसे कहीं ज्यादा प्रबल है।

गौरी—अच्छा तो पुकार अपने रक्षकको। देखूं, मेरे हाथोंसे वह कैसे तेरी रक्षा करता है।

जाता तोभी ग़नीमत थी। घरका रुपया तो घरमें रहता, पर बाज़ी मारी तो एक Up-Set (अप-सेट) ने। आज अगर कहींसे दो सौ रुपये दे सको तो पूरे दो हज़ार रुपये गिनकर तुम्हारे हाथपर रख दूं।

ललिता—तुम्हारी रानीकी कुल जमा-पूंजी यह हार है (गलेमें पहना हुआ हार दिखलाना) लो, ले जाओ।

रामकि०—पर....तुम्हारा गला सूना कर ?

ललिता—उंह, मन तो सूना न रहेगा।

रामकि०—तुम मेरी स्त्री नहीं हो....

ललिता—तो, क्या बहिन हूं ?

रामकि०—बहिनसे भी ऊंची। तुम मेरी कौन हो, यह मैं बार २ सोचनेपर भी नहीं जान पाता। ओफ़! मैं तुम्हारा कैसा सर्वनाश कर रहा हूं...यह सोचते ही भयसे कांप उठता हूं।

ललिता—क्यों ? मेरे गहनोंकी अश्व-मेध यज्ञमें आहुति दे दी है इसीलिये ? लेकिन जानते हो मुझे किस बातका कष्ट है ? मैं यह सोचकर मरी जा रही हूं कि, अब अगर तुम कुछ मांगोगे तो मैं न दे सकूंगी; तुम उदास होकर चले जाओगे, मैं यह न सह सकूंगी।

रामकि०—तुम मेरी यह बुरी लत मिटा दो। बक-झककर, भूखों रखकर, यहा तक कि मार पीटकर भी, जैसे हो मुझे सुधार लो। मेरी तरह जुआड़ी स्वामीका होसला बढ़ा

(केशव पीछेसे गौरीनाथकी गर्दन पकड़ कर ... गौरी ...
गिर पड़ता है, केशव उसकी छातीपर ...)

ललिता – चाचाजी ! चाचाजी ! (रामनाथके पास ...)

रामनाथ—बेटी ! प्यारी बेटी !

केशव—अब बोल, जिस ज़बानसे सतीका अपमान किया है ... बाहर खींच लूं ? जिन हाथोंसे ... पवित्र ... को अपवित्र किया है उन्हें मरोड़ दूं ?

ललिता—क्यों, देखा मेरे ईश्वरको ?

पागल—ह. हः हः हः ! समझता है दुनियासे ईश्वरका नाम ... गया, क्यों ?

गौरी—क्षमा ! क्षमा !

पागल—जरूरत पड़ने पर बाप-बाप पुकारने लगा। सर्पिणीके साथ खेलने चला था। यह जो बालोंका एक-एक गुच्छा पृथ्वी पर फैलकर बिखर गया था, जानता है वह क्या था ? बालोंका एक-एक गुच्छा एक-एक विषधर सर्प था। सब यदि एक साथ इकट्ठे होकर सिरसे खिसक पड़ते तो उस विषकी भयंकर ज्वालासे तू अब तक भस्म हो गया होता।

गौरी—मैं प्रतिज्ञा करता हूं, आजसे किसी स्त्री पर बुरी नज़र न डालूंगा। स्त्री-जातिको मा-बहिनके समान समझूंगा। मेरी जान मत लो।

ललिता—अब इसे क्षमाकर दो भाई।

तृतीय अङ्क

प्रथम दृश्य

[स्थान-माधवप्रसादका उद्यान]

रामकि०—कैसा मनोहर दृश्य है! सरस्वती और ललितामें कितनी समानता है। वैसी ही करुण आखें, वैसी ही सरलता-भरी बाते·······ओः एक-एक दिन कर आज तीन वरस बीत गये, पर स्मृतिकी वह मलिन छबि मिटनेकी बजाय और भी स्पष्ट होकर सामने आ, जबरन आंखोंकी खुली हुई पलकोंको वन्दकर देती है!

(सरस्वतीका प्रवेश)

सरस्वती—हरदम क्या सोचा करते हो? दिन पर दिन सूखते जाते हो। न पहले जैसी चेहरे पर हंसी खेलती है, न वैसी प्रसन्नता ही है। मुझसे भी पहलेकी तरह प्रेमसे बाते नहीं करते, बात क्या है? अगर तबियत ठीक न रहती हो तो थोड़े दिनोंके लिये कहीं बाहर जाकर घूम-फिर आओ।

रामकि०—ह: ह:, मेरी तबियत ठीक है, तुम्हारे साथ बड़े सुखमें हूं।

सरस्वती—असल बात मत छिपाओ। मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूं। मुझे बता दो तुम्हें किस बातका दुःख है। सिर्फ इसी-

सरस्वती—इस समय कहां हैं ?

रामकि०—भगवान जाने ...... !

सरस्वती—तुमने तो कहा था यह मेरा प्रथम व्याह है ?

रामकि०—वह केवल तुम्हारे बाबूजीको ठगकर चार हजार रुपये लेनेके लिये ढोंग रचा था।

सरस्वती—अब क्या होगा ?

रामकि०—होगा क्या ? जो जहरका प्याला होठोंसे लगाया है उसीमें तिल-तिल कर मरूंगा।

सरस्वती—अगर उन्हें न पा सके तो ?

रामकि०—तो तो शायद तुम्हें····

सरस्वती—(रामकिशोरका मुंह बदकर) बस····बस··· हे भगवान ! अच्छा यदि इस क्षुद्र जीवनको—बाप-मा, यहां तक कि इहकाल और परकाल तकको भुलाकर—तुम्हारी इच्छा और सेवामें उत्सर्ग कर दूं, तब भी क्या मैं बहिनके स्थानकी पूर्ति न कर सकूंगी ?

रामकि०—सुरु, तुम चिन्ता न करो। तुम्हारे साथ विवाह करते ही मैंने उसको फिरसे पानेकी आशा त्याग दी है।

सरस्वती—क्यों ?

रामकि०—तुम्हारे साथ व्याह जो किया है।

सरस्वती—मेरे साथ व्याहकर तुमने ऐसा कौनसा अन्याय कर डाला है ?

रामकि०—वह भी सुनोगी ? पर नहीं-नहीं, सुननेसे तुम्हें कष्ट

होगा। तुम उस आघातको न सह सकोगी।

सरस्वती—बताओ बताओ, मैं सब सह लूंगी। तुम स्वामी, गुरु, देवता हो। मेरी प्रतारणा न करो।

शान्तिदेव—अच्छा तो सुनो। पर मेरी छाती पर हाथ रख कर कहो कि आज जो मैं कहूंगा, जीवित रहते तुम किसीसे—यहां तक कि अपनी अम्मा और बाबूजीसे भी न कहोगी।

सरस्वती—(पतिकी छाती पर हाथ रखकर) मैं प्रतिज्ञा करती हूं।

कर रहनेकी इच्छा होती है। मैं आजसे तुम्हारी सुरू नहीं, अभागिन हूं...पतिता हूं! तुम्हारे पवित्र चरण छूने का मुझे अधिकार नहीं है....(रोती हुई जाना)

(रामकिशोर अवाक खड़ा रह जाता है)

द्वितीय दृश्य

(स्थान—अयोध्यामे कामता प्रसादका मकान)

ामता०—मुनीमजी, अब फिर क्या मैं अपनी ललिता बेटीको न पाऊँगा ?

ामनाथ—बाबूजी, आपने कलकत्तेमें तो अच्छी तरह खोज नहीं की और सीधे यहां चले आये। मेरा मन कहता है कि वह वहीं कहीं है।

ामता०—नहीं मुनीमजी, वह कलकत्तेमें नही है। एक दिन मैं संध्या समय गंगाके किनारे-किनारे जा रहा था [illegible] पगलेने पुकारा, मैं रुक गया। उसने पास आकर कहा 'अयोध्या जाओ अयोध्या। दो चीजें खोई हैं, दोनों ही पाओगे।' मुनीमजी, मैं उसका मतलब नहीं [illegible] खोई तो एक चीज है, उसने दो चीजें क्यों [illegible]

ामनाथ—तब तो जरूर उसने ललिता और राम[illegible] कही है। बाबूजी, अयो[illegible] [illegible] आपकी ललिताको आपकी [illegible]

रामनाथ—उसके बाद क्या हुआ बाबूजी ?

कामता—उसके बाद उसके पशु-तुल्य स्वामीने एक कुजातकी लड़कीसे शादी कर ली। मेरी अभिमानिनी बेटी वह असह्य ज्वाला नहीं सह सकी। तुम्हीं कहो न, कौन स्त्री स्वामीके ऐसे राक्षसी अत्याचारको सह सकती है ? मेरी बेटीने ज्वालासे पीड़ित होकर देश छोड़ दिया। मुनीमजी, अबतक क्या वह बची होगी !

रामनाथ—(विस्मित होकर) यह आपसे किसने कहा ?

कामता—किसी ऐसे-वैसे आदमीने नहीं, रामकिशोरके खास दोस्त गौरीनाथने कहा है। वह स्वयं उस विवाहमें हाजिर था।

रामनाथ—यह भी क्या हो सकता है ?

कामता—क्यों नहीं हो सकता मुनीमजी ? मैं यदि बाप होकर रुपयोंके लोभमें पड़ अपनी बेटीको भूखी-प्यासी घरसे निकाल दे सकता हूं तो वह रुपयोंके लोभमें पड़कर दूसरी शादी नहीं कर सकता ?

[नेपथ्यमें मोतीलाल—'कुछ खानेको दो बाबा']

कामता—किसी स्त्रीका गला है ! है न मुनीमजी ? ठीक [illegible] गला है। यदि ललिता हुई — यदि मेरी ललिता ही है... ठहरो ठहरो मैं खुद जाकर देखता हूं। यदि मेरी ललिता हुई तो मैं उसे छातीसे लगाकर लिवा लाऊँगा [illegible] [illegible]

कर आज तुम रास्तेमे खड़ी होने लायक बन गई हो। इतना धन, इतनी सम्पत्ति, इतना गहना मैंने जुयेमे फूंक दिया और तुमने दो बातें भी नहीं कही। (ललिताका हंसना) हस रही हो ? इतनेपर भी तुम्हे हंसी सूझती है !

ललिता—हंसी भी क्या सन्दूकमे बन्द कर रखनेकी चीज है ? हंसी मेरे हृदयका धन है। मेरे हृदयका भण्डार भरा-पूरा है, इसीलिये हंसी भी फूटी पड़ती है।

रामकि०—कैसा दुर्भाग्य है रानी, मेरे जैसा अभागा जुआड़ी तुम्हारा स्वामी बनने योग्य था ?

ललिता—और मैं यह सोचती हूं कि, शायद मैंने पिछले जन्ममें शिवकी पूजा कर उन्हे सन्तुष्ट किया था इसीसे शिवके समान स्वामी पा सकी हूं। विद्वान, चरित्रवान, दयावान, सत्यवादी। जिसके स्वामीमे इतने गुण हों, उससे बढ़कर संसारमे और कौन सुखी है ? बात बातमे अपनेको हीन कहकर तुम मेरी पति-भक्तिकी परीक्षा ले रहे हो, क्यों ? पर तुम नहीं जानते तुम्हारी इन बातोंसे मेरे मनमे कहीं चोट पहुंचती है। कभी कभी तो रुलाई आ जाती है। जाओ, खड़े क्यों रहोगे ? मैं भी जाकर रसोईमे लगूं।

रामकि०—क्यों, क्या आज मिसरानी नहीं आई ?

ललिता—मिसरानीको जवाब दे दिया। उसको रखना नहीं चाहती थी। फिर झूठ-मूठ हर महीने दो रुपयेका खर्च

रामनाथ—पैदल! आपपर ऐसी कौनसी मुसीबत आ पड़ी है?

मोती—जो समझते हैं धर्म सोता है, उनकी दशा ठीक मेरी तरह होती है। मैं कानपुरमें सरकारी मुलाजिम था। परिवारमें हम तीन प्राणी थे। मैं, मेरी स्त्री और मेरा एक जवान लड़का। प्लेगमें सवेरे स्त्री मरी, रातमें लड़का मरा, लड़केका दाह-संस्कारकर घर आया तो देखा—मकान आगमें धाय-धाय कर जल रहा है! मेरा सब कुछ उस आगमें स्वाहा हो गया! केवल शरीर परका यह कपड़ा और गमछा बचा है।

कामता—भगवानने ठीक समयपर एक साथी जुटा दिया। आओ भाई, दोनों जने गले मिलकर हम दोनों एक दूसरेकी दु:ख-कहानी सुनें।

ललिता—वहिन, यह तुम्हारा दोष नहीं, मेरे प्रारब्धका दोष था। गई-बीती बातोंका ख्याल कर अपना दिल न दुखाओ। यदि मेरे क्षमा कर देनेसे ही तुम्हे सन्तोष मिलता हो तो मैं हृदयसे तुम्हे क्षमा करती हू। पश्चातापने तुम्हारे हृदयको धोकर स्वच्छ बना दिया है। तुम ब्राह्मण-कन्या हो। भूलसे तुमने चाहे जो किया हो, फिर भी पवित्र ब्राह्मण-वंशमे तुम्हारा जन्म है। अपने मनको पवित्र कर यदि कर्तव्य-पथ पर फिर सको तो ब्राह्मणत्वकी पवित्रता फिर लौट आयेगी।

मोहिनी—तुम्हारे दिये हुये इस महामन्त्रके साधनमे जीवनको फिर एकबार कर्तव्य-पथ पर लानेकी चेष्टा करूंगी। तुम्हारा आशीर्वाद और अयोध्यानाथकी विश्व-व्यापी आखें मेरी रक्षा करेंगी। दो वहिन, अपने इन पवित्र चरणोंकी धूल मेरे सिरमे लगा दो [ललिताके चरणोंकी धूल अपने सिरपर लगानेकी चेष्टा करना]

उनसे यों ही बता दीजियेगा कि आपने जो चीज़ खोई है उसे शीघ्र पा जायेंगे।

ललिता—इस रास्तेमें आकर फिर वही दुकानदारीकी बातें ?

सरस्वती—एक असहाय स्त्रीको—उसके स्वामीकी दुश्चिन्तासे मुक्त कर सुखी बनाना, बड़े पुण्यका काम है।

ललिता—(स्वगत) फिर घर-गृहस्थीकी झंझटमें फंसूं ! किस सुखके लिये झूठ बोलूं। यदि फिर कोई विपद उठ खड़ी हो। (प्र०) आपका नाम ?

सरस्वती—सरस्वती। घरमें सब लोग 'सुरु' कह कर पुकारते हैं। यदि कभी छोटी बहिनके स्नेहने आपके हृदयको सींचा हो, तो मुझे भी अपनी पद-सेविका छोटी बहिन ही समझिये। न जाने क्यों मेरा मन आपको 'जीजी' कह कर पुकारनेके लिये बड़ा उत्कण्ठित हो रहा है।

ललिता—(स्व०) इसकी बातें सुन कर रुलाई आती है। सचमुच [illegible] कोमल बालिकाको बड़ा कष्ट है। (प्रगट) यहांसे आपका मकान कितनी दूर है ?

सरस्वती—बहुत पास। बड़े रास्तेमें गाड़ी खड़ी है, कुछ मिनिट के भीतर घर पहुंचा देगी। मैं अकेली [illegible] घूम-उतरा रही हूं। यदि आप दया कर मेरा [illegible] करें तो मेरा मन कहता है, [illegible] जायेंगे।

ललिता—पर यदि आपके माता पिता

मोती—पहले एक ग्लास ठण्डा पानी दो भाभी। (लक्ष्मीका पानी लाने जाना) सब बताऊंगा······बतानेके लिये आया हूं। ओफ! प्यासके मारे जान निकली जाती है। पानी दो पानी दो···

माधव—(नेपथ्यकी ओर) सुरुकी मा, जल्दी पानी लाओ। (लक्ष्मी का एक हाथमें मिठाई दूसरेमें पानीका ग्लास लेकर आना)

(मोतीलाल जल्दीसे लक्ष्मीके हाथसे ग्लास लेकर पीता है)

लक्ष्मी—खाली पानी पियोगे? एक टुकडा मिठाई मुँहमें डाल लो।

मोती—(एक सांसमें पानी पीकर) भाभी, फिर भी जलन मिटी...मुझे बरफका पानी दो .जितनी ठंढी चीजें तुम्हारे पास हों— उनमें मुझे डुबो दो! मेरा सारा शरीर जला जा रहा है। भैया और अपने पैरोंकी धोअन मेरे सारे शरीरमें मल दो। भाभी, इस जलनसे मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।

माधव—मोती क्या बात है, जल्दीसे बताता क्यों नहीं? मैं तो योंही मर रहा हू, मुझे और न सता।

मोती—जन्म भर मैंने जितने पाप किये थे, सबोंकी इकट्ठी सजा पा गया हू! भैया, प्लेगमें सवेरे छोटी बहू मरी, शामको कमल मरा, दोनोंको फूंक फार जब घर आया तो देखा मकान—जिसमें मैं रहता था, जिसमें मेरा सब [illegible] —आगमें धू-धू कर जल रहा है। [illegible] है। [illegible] है ॥

लक्ष्मी—(रोती है) हाय मेरी छोटी बहू! हाय मेरा [illegible]

(राजूका प्रवेश)

राजू—चाचाजी, रामकिशोरके ससुर आये हैं।

माधव-रामकिशोरके ससुर ?

राजू—हां चाचाजी, रामकिशोरके पहले ससुर।

माधव—तो क्या रामकिशोरको यह पहली शादी नहीं है ? रामकि-शोरकी पहली स्त्री जीवित है ?

राजू—हां चाचाजी, वे कहते हैं, रामकिशोरके अत्याचारोंके कारण उनकी कन्या न जाने कहां चली गई है। छोटे बाबू रातको उन्हींके मकानमें ठहरे थे। बिचारे लड़कीके वियोगमें पागल हो रहे हैं।

माधव—हाय सुरु ! इतना खर्च कर भी तुझे सुखी न बना सका ! (लक्ष्मीसे) सुरुकी मा, तुम फ़ौरन सुरुको लेकर चली

बनानेके लिये चौदह रुपये देना बड़ा खलता था। मेरा भी तो सारा दिन सो-बैठकर बीतता था।

रामकि०—दाई भी तो कई दिनोंसे नहीं दिखाई देती।

ललिता—गिरिस्ती ही कौन इतनी बड़ी है, जो बिना दाईके काम नहीं चलेगा। दो आदमियोंकी दो थालियां मलनेके लिये एक दाई! देखो घर-गिरिस्तीमें ऐसी फैलसूफी करनेसे काम नहीं चलता। (खूटीपर टगी हुई तौलिया देकर) लो, जल्दीसे नहा आओ (रामकिशोर जाना चाहता है ललिता पुकारती है) और सुनो (हार उतारकर देना) इसे भी लेते जाओ (रामकिशोर नहीं लेना चाहता) लो मुझे रसोईकी देर हो रही है (हार देकर जाना)

रामकि०—ओफ्! मैं कितना नीचे गिरता जा रहा हूं। न.... न....आज जैसे भी हो बाजी जीतनी ही होगी। नहीं तो ललिताका भविष्य....ओः....हे जगदीश!

द्वितीय दृश्य

[स्थान—माधवप्रमादका सजा हुआ उद्यान]

(सखियां फूल चुनती हैं और गाती हैं!)

नव बसन्त छायो सखि........

कुञ्जवनकी डार २ कोयल करती पुकार, सुख अनन्त पायो ॥स०
विविध बरन रंग-बिरंग, खिले फूल नव उमंग।

सरस्वती—पहले दवा पीलो, फिर पानी पीना।

रामकि०—तुम्हारे हाथका पानी पीकर ही तृप्त हो जाऊंगा, दवाकी अब जरूरत नहीं है। सुरु ! तुम सारी रात नहीं सोयीं, बैठी-बैठी पंखा झलती रहीं। ओः ! मेरे कारण तुम्हे कितना कष्ट है। और तुम कैसी सुन्दरताके साथ अपना कर्तव्य निभाये जा रही हो ! ऐसा निष्काम धर्म किससे सीखा सुरु ?

सरस्वती—निष्काम और सकाम तो मैं कुछ जानती नहीं. बापू-जीने जितना बता दिया है उसीका पालन करती आ रही हूं। गीतामे भगवानने कहा है "फलकी कामनासे कोई काम नहीं करना चाहिये।" (पानीका गलास देकर) लो पानी पियो।

शायद वह उपकार न कर पाता, यमराज कन्धेपर हाथ दिये खड़े हैं। (रक्त गिरना)

रामकि०—पर आप कौन हैं ? क्या आप मुझसे ही मिलने आये हैं ?

गौरीनाथ—अभीतक आपने मुझे नहीं पहचाना ? मेरा नाम गौरीनाथ है।

रामकि०—गौरीनाथ ! तुम इस अवस्थामे ! (राजूका पानी लेकर आना) राजू भैया, पानी नहीं, थोड़ा गरम दूध ले आओ, ये गौरीनाथ हैं।

राजू—गौरीनाथ, यह क्या कहते हो रामकिशोर, मैं तो पहचान ही नहीं सका। मैं अभी दूध लेकर ..

रामकि०—(तकियेके नीचेसे पिस्तौल निकाल कर) बस यही मेरा प्राय-
श्चित्त है ! मैं भी वहीं जाऊंगा जहां मेरी ललिता है।

(मारना चाहता है—इतनेमें सरस्वतीके साथ ललिताका प्रवेश)

सरस्वती—हैं-हैं, यह क्या करते हो ? (हाथसे रिवाल्वर छीनना)

ललिता—(रामकिशोरको देखनर चौंकना) ऐं ! यह क्या ?

रामकि०—(ललिताको देखकर) ललिता !

सरस्वती—(हाथ जोड़कर) अयोध्यानाथ ! तुम्हीं सत्य हो !

षष्ठम् दृश्य

[स्थान—माधव प्रसादके घरका अन्तः पुर]

(सरस्वतीका गाते हुए प्रवेश)

प्रभु तव महिमा अपरम्पार !

सप्तम दृश्य

[स्थान—रामकिशोरका कमरा]

ललिता—अब ज्यादा न चलो-फिरो। तुमने अभी कुछ खाया-पिया नहीं है। अगर कहीं सिरमें चक्कर आ जाय तो और आफ़त हो।

रामकि०—प्रिये! डरो मत। मैं अब पूर्ण स्वस्थ हूं। प्राचीन काल में सावित्रीने अपने स्वामीको यमके हाथोंसे बचाया था, आज तुमने सावित्रीकी देह धारणकर. अपने [illegible] स्वामीकी यमके हाथोंसे रक्षा की है। प्यारी, जगदीश्वरने तुम्हें लौटाकर मुझे अमर बना दिया है। किन्तु इतना सुखी होते हुए भी मैं एक बातकी मीमांसा नहीं कर पाता।

हैं। हिन्दू-स्त्रीके लिये स्वामी क्या वस्तु है, यह तुमने ही समझा है प्राणनाथ।

(नेपथ्यमें पागल—"सुन ले, कान खोलकर सुन ले, यह क्या कह रही है। मैं कुछ नहीं जानता, मैं कुछ नहीं जानता")

राजू—रामकिशोर, सर्वनाश हो गया! तुमने जहर खा लिया।

रामकि० }
ललिता } ऐं!

राजू—तुम दोनों फौरन जाओ, मैं डाक्टर [illegible] जाता हूं।

(प्रस्थान)

रामकि०—सुख - सुख! (प्रस्थान)

ललिता—यह तूने क्या सर्वनाश कर डाला [illegible] ([illegible]

प्रकृति छटा लखि अनंग, सुध बुध बिसरायो ॥ सखि० ॥
नव दल तरुवर सुभेष, सजित फूल फल विशेष ।
झूमत भंवरा अशेष, विचरत हरसायो ॥ सखि० ॥
मधुर मलय बहे समीर, गावत पिक-मोर-कीर ।
आओ चुने फूल सजनि, समय शुभ सुहायो ॥ सखि० ॥

(सरस्वतीका गाते हुये प्रवेश)

गाना

प्रेम ही आधार जगतमें;
परम पुनीत प्रेम अति पावन, विमल स्वच्छ अविकार ॥
प्रेमहि सो उपवन काननमे, सुन्दर सुरभि अपार ।
बरन-बरन अति रंजित मनहर, खिलते फूल हजार ॥
कलियन-कलियन पर अलि झूमत, कोयल करत पुकार ।
प्रेममयी बह रही पवन बया, तरुवरकी झङ्कार ॥
फूल रही फुलवारी प्यारी, प्रेम मोद भर भार ।
जगतमे प्रेम ही आधार ॥

([illegible])

दर्शन कर लूं, ओ· पानी ..पानी। (माधवप्रसादका पानी पिलाना, रामकिशोरका नेपथ्यमें 'गुरु' 'गुरु' कहते हुये आना। ललिता जल्दीसे जाकर अपनी जंघापर सरस्वतीका सिर रख लेती है। सरस्वती अचेत पड़ी है। माधवप्रसाद वहांसे हट जाते हैं—रामकिशोर सरस्वतीके पास जाता है)

रामकि०—गुरु-गुरु, मुझे यह किस अपराधका दण्ड दे रही हो! मुझे सदाके लिये अपराधी बनाकर न चली जाओ... बोलो।

सरस्वती—कौन प्राणनाथ ...ओ ओ ..

[पागल जाने लगता है सरस्वती उठ कर पुकारती है]

सरस्वती—पागल ..पागल...ठहरो ठहरो। बताओ, तुम कौन हो?

(पागल जाना चाहता है सामनेसे कामताप्रसादका इन्स्पेक्टर और दो सिपाहियोंके साथ प्रवेश)

कामता—(इन्स्पेक्टरसे) (रामकिशोरकी ओर इशारा कर) यही है मेरी बेटीका हत्यारा, इसीने ([illegible]) ऐं, कौन ललिता! .. यह [illegible]।

(इन्स्पेक्टर पागलको देख आश्चर्य [illegible])

इन्स्पेक्टर—हुजूर आप [illegible]।

पागल—चुप। (चुप रहनेका इशारा करना)

यही उपयुक्त समय है। (नकली दाढ़ी निकालकर कामता प्रसादसे) भाई साहब! आप मुझे पहचानते हैं?

कामना—ऐं, द्वारकाप्रसाद! मैं सपना तो नहीं देख रहा हूं! तुम तुम अभी तक जीवित हो! ओः (सिर पकड़कर बैठ जाना)

पागल—हां भैया, मैं अबतक पागलके रूपमें था। आजसे फिर वही द्वारकाप्रसाद हूं। जिसकी जायदादका हिस्सा हड़पनेके लिये आपने उसे बीच गंगामें नावपरसे ढकेल दिया था। केवल उसे ही नहीं, उसकी नादान बिना मा की कुम्हलाई बच्ची कलीको भी। वही कली आज सुख के नामसे इतनी बड़ी होकर आपके सामने खड़ी है।

सरस्वती—पिताजी, पिताजी! (पागलसे लिपटना)

प्रभा—बाबाजी! („)

पागल—आओ मेरी बच्चियों! (लिपटाना)

होकर रंगून चला गया। वहा मैंने व्यापारमें लाखों रुपये पैदा किये। लेकिन हरदम लल्लीकी याद बनी रहनेके कारण मैं उसका पता लगानेके लिये कलकत्ता चला आया। कलकत्तेमे भी मैंने अगाध सम्पत्ति पैदा की। सरकारने खुश होकर मुझे "राजा साहब" की पदवी प्रदान की। जबतक लल्ली वहां थी, मैं बराबर उसकी तथा ललिताकी देख-भाल करता रहा। जब रामकिशोर की गौरीनाथके साथ दोस्ती हुई, तभी मैंने समझ लिया कि जरूर कुछ अनिष्ट होने वाला है। वही हुआ, रामकिशोरने वेश्याके फेरमें पडकर ललिताको त्याग दिया। उधर नीच गौरीनाथ धोखेसे फुसलाकर, ललिताको बगीचे ले गया और उसका धर्म नष्ट करना चाहा। इस की खबर मुझे मेरे परम मित्र केशवने दी। मैं उसको तथा भैयाके मुनीमको साथ लेकर बगीचे पहुंचा और उस दुष्टके हाथोंसे ललिता बेटीकी इज्जत बचाई। वहीं यह सुनकर कि लल्ली कलकत्तेसे अयोध्या चली गई है, मै भी ललिताको लेकर यहा चला आया। इसके बाद ललिता और सुरूका मिलन हुआ। रामकिशोरने जोकि ललिताके लिये पागल हो गया था, ललिताको पाकर नया जीवन धारण किया। मुझे यहा आया देख सरकारने मुझे यहांका सबसे बड़ा हाकिम बना दिया। आपने शायद राजा विश्वम्भरनाथका नाम सुना होगा?

पाठक—अच्छा भैया, कामताप्रसादजी, आप दोनों आकर अपनी इन दोनों बेटियोंको आशीर्वाद दीजिये जिससे ये आपसमें मिल-जुलकर एक ही पतिको अपना इष्ट-देवता मानकर उसकी सेवामें रह सकें। और रामकिशोरको भी आशीर्वाद दीजिये कि वह एक सद्गृहस्थकी तरह रहकर पति-धर्मका पालन कर सके।

[[illegible] कामताप्रसादका आशीर्वाद देना, रामकिशोर-ललिता और [illegible] घुटने टेक कर प्रणाम करना—परदा गिरना]

(पागलका हंसते हुये प्रवेश)

पागल—हः हः हः हः

लक्ष्मी—क्यों रे पगले, इस तरह बिना पुकारे-खखारे गिरिस्त घरमें एक दम धड़-धड़ाता हुआ क्यों घुस आया ?

पागल—हः हः हः हः मुझसे न पूछो, मैं कुछ नहीं जानता।

लक्ष्मी—अरे खाली ही ही ही ही हंसेगा ही या अपने फूटे मुंहसे कुछ बोलेगा भी ?

सरस्वती—मा, तुम इसे कुछ न कहो। बिचारा भीख मांगकर खाता है। भूख लगी होगी, इसीलिये चला आया। (पागलसे) क्यों जी पगले, कुछ खाओगे ?

लक्ष्मी—वाह री लड़की, रोज़-रोज़का यह झमेला कौन पालेगा? अभी उसी दिन तो खानेको दिया था। (पागलका हंसना) ओहो ! दिमाग तो खो

पागल—कुत्ते-बिल्ली भी भूख लगनेसे खाते और नींद लगनेसे सोते हैं। प्यार करनेपर हंसते और मार खानेसे रोते हैं। मैं कुत्ता, तुम बिल्ली और (सरस्वतीकी ओर संकेत कर) यह आदमी। हः हः हः हः मैं कुछ नहीं जानता, कुछ नहीं जानता।

लक्ष्मी—क्यों रे, मैं बिल्ली हूं? निकल अभी घरसे। निकल निकल...

पागल—बिल्ली नहीं तो क्या हो? अढाई पांव चलते ही सब भूल गई? उठने-बैठने मार खाती हो, फिर भी नहीं समझती? हः हः हः हः मैं कुछ न बोलूंगा, कुछ न

वालूंगा (नेपथ्यमें "राम नाम सत्य है" की आवाज़) यह सुनो दुकानदारी खतम। तुम्हेभी एक दिन यह सजी हुई दुकान उठानी होगी,समझीं ? हः हः हः हः मैं कुछ नहीं जानता।

लक्ष्मी—क्यों रे सत्यानासी, इतने लोगोंके रहते मैं ही क्यो चली जाऊंगी। आग लगे ऐसे मुंहमे—पागल तो एक दम पागल !

पागल—अरे दुकान उठाकर फिर जमानी होगी। कभी लुटेगी, कभी सजेगी। शातिसे कभी बैठने न पावोगी। जिस तरह वह चैनसे नहीं बैठता उसी तरह तुमको भी आरामसे न बैठने देगा। हः हः हः हः मैं कुछ न बोलूंगा,कुछ न बोलूंगा...

लक्ष्मी—(सरस्वतीसे) पण्डितजीके आनेका समय हो गया; मैं भीतर जाती हूं। (फिर लौटकर) उसे निकालकर दरवाजेमें बेडा चढ़ा लेना। (प्रस्थान)

पागल—हः हः हः हः, जरा इसकी बुद्धि तो देखो। मकानके भीतरका दरवाजा बन्द करती है, पर खाली जगह दोवार नहीं उठाती...हः हः हः हः

सरस्वती—क्यों जी पगले, तुम हाथ देखना जानते हो ? [हाथ दिखाना]

पागल—तेरे हाथ और माथा दोनों ही साफ हैं। न नः मैं कुछ नहीं जानता, कुछ नहीं जानता ..

सरस्वती—बताओ न पगले। तुम्हारे पैरों पड़ती हू। तुम्हारी बातें मुझे बड़ी अच्छी लगती हैं।

पागल—तेरी ही! जीत हुई। देख तेरा रास्ता साफ है, अबेरे या काटेका नाम नहीं है। कमर कसी चलती जा। कोई तेरे रास्तेमे बाधा न डालेगा। बस, अब मैं कुछ नहीं जानता...हः हः हः हः

सरस्वती—पागल, तुम यहीं बैठो, मैं तुम्हारे लिये खानेको लाती हू [जाना चाहती है]

पागल—अरे सुन-सुन, ये कौवे कांव-कांव करते हैं, इन्हे दे दे। तु जल्दी-जल्दी सारा काम खतम कर ले। सवेरे नाव छूटेगी, संझा होते-होते पार हो जायगी। दिनके उजालेमे फिर लौटेगी। हः हःहः हः (प्रस्थान)

सरस्वती—इसे देखकर मेरा किसी काममे जी नहीं लगता। रात-दिन इसीकी बाते सुननेकी इच्छा होती है। मा उसे दुरदुराती है—मुझे रुलाई आती है। पर डरके मारे खुलकर कह नहीं सकती।

तृतीय दृश्य

[स्थान—कामता प्रसादका घर]

(आगे-आगे क्रोधसे भरे कामता प्रसाद, उनके पीछे रामनाथका प्रवेश)

कामता—चूल्हेमे जाय, भाड़मे जाय ! कह दो उससे मुझसे मिलनकी कोई जरूरत नहीं है। मै कुछ नहीं कर सकता। दुनियामे सब सुखोंका अधिकारी होकर भी एक दिन

सुख नहीं भोग सका। छोटी लड़की दो बरसकी होकर मर गई, मगर इसे मौत नहीं थी।

रामनाथ—बाबूजी, आपकी लड़की साक्षात् लक्ष्मी है।

कामता—ऐसी लक्ष्मीके मुंहमें आग लगाओ। हतभागिनी स्वामी के लिये अपनी देह गला रही है। मुनीमजी! व्याहके समय यह सोचकर कि, बिना माकी लड़की है, लोग तरह तरहकी बातें करेंगे, तीन डिगरी पास लड़केको नक़द पाच हजार रुपये देकर उसके साथ इसका व्याह किया। गये बरस मकान बिक रहा था। चार हज़ार रुपये देकर मकान बचाया। लेकिन दो एक बरसके भीतर ही उस हरामजादेने सब उड़ा दिया। कोई कारबार नहीं, मामला-मुकदमा नहीं, खाली रेस और जुएमें—और उस बेहया लड़कीने—जिसे तुम लक्ष्मी कहते हो अपने बदनका एक एक गहना उतारकर उस जुआड़ीको दे दिया। ख़बरदार वह मेरे सामने न आने पावे।

रामनाथ—फिर भी बाबूजी, कहने सुननेको यही एक लड़की है। इस बार दे दीजिये फिर न दीजियेगा।

कामता—ना-ना, अब मैं एक कौड़ी भी न दूंगा। यह मेरी गाढ़ी मेहनतकी कमाई है। दिन-दिन भर सिरपर बोझा रख, घाम-घाम घूमकर मैंने रुपये इकट्ठे किये हैं। रुपये इसलिये नहीं हैं कि इस बेवकूफ लड़कीको लुटानेके लिये दे दूं। मैं आज इस हरामजादेको [illegible]

मिनटमें सब जुएमें फूंक देगा। जो मैंने सोचा था, वह नहीं हो सका मुनीमजी! मेरे मरनेके बाद मेरी इतनी बड़ी जायदादका सुख भोगनेवाला कोई नहीं है। मुझे लाचार हो दुबारा शादी करनी होगी। (ललिताका प्रवेश) तू मुझे जलानेके लिये फिर यहां क्यों आई है? तेरा आना व्यर्थ है। मैंने तुझसे, जिस दिन तेरा मकान बिकने से बचाया था, उसी दिन कह दिया था कि अब एक पाई भी न दूंगा। मेरी बात कभी नहीं टलती—यह तू अच्छी तरह जानती है।

ललिता—बाबूजी, बड़ी विपदमें पड़कर तुम्हारे पास आई हूं। मकान बिक जानेसे कहां जाकर खड़ी होऊंगी? मकान फिर बंधक हो गया है। आज जाय, कल जाय। पेट भर खानेको चाहे मिले या न मिले, पर अपने मकानमें बिना खाये-पिये भी शान्तिसे रहा जा सकता है।

कामता—तेरी जैसी आवारा औरत और मर्दके लिये जिन्हें मान-अपमानका रत्ती भर ख्याल नहीं है वे चाहे घरमें रहें, या पेड़के नीचे, एक ही बात है।

ललिता—बाबूजी, मुझे पेड़के नीचे रहते देखकर क्या आप इस अठमंजिले मकानमें शांतिसे रह सकेंगे?

कामता—क्यों नहीं रह सकूंगा? जो जैसा करेगा वैसा फल भोगेगा। इसमें मेरा क्या? मैंने माया-मोहका कर्ज़ा नहीं खाया है?

पतिता

[सामाजिक नाटक]

लेखक

विजय शुक्ल

प्रकाशक—

आदर्श हिन्दी पुस्तकालय

२१३, चित्तरञ्जन एवन्यू (साउथ)

कलकत्ता।

[प्रथम संस्करण]   जनवरी १९३८   [मूल्य ॥)]

लिता—बाबूजी, यह आप झूठ कहते हैं। आपने जरूर माया-मोहका कर्जा खाया है। नहीं तो उस बार मकान बिकनेसे क्यों बचाया था ?

ामता—वह माया-मोहका कर्जा नहीं—तेरे भिखारी पतिको भीख दी थी।

लिता—तो इस बार लड़कीको भीख दे दीजिये।

ामता—अपात्रको दान देना पाप है। अढाई आदमीका कुटुम्ब और इतनी नवाबी ? जा-जा मेरे लिये मेरी दोनों कन्यायें मर गईं ?...

ामनाथ—तब दुनियामें आपके लिये कौन बचा है ?

ामता—रुपया ! मुनीमजी रुपया ! लड़की-लड़के तो आते ही जाते रहते हैं, पर रुपये पेड़में नहीं लगते। मुनीमजी, मेरा बस चले तो जो रुपयोंको उड़ाता है उसे फांसी या सूलीपर चढ़ा दूं।

ललिता—बाबूजी, आप गुस्सेमें जो चाहे सो कह लें, पर सन्तान की माया-ममता मा-बापसे कभी नहीं छूटती। मैं आपके पैरोंपर गिर पड़ूंगी। रुपये न मिलनेसे वे मुझे घरसे निकाल देंगे। आपकी लड़की होकर किसके दरवाजेपर जाकर खड़ी होऊंगी ? (पैर पकड़ना)

ामता—(पैर छुड़ाते हुए) पैर छोड़, छोड़ मेरे पैर। भिखमंगिन कहीं की ! समझती है गिर पड़नेसे रुपये पा जायेगी। अरे गिर पड़नेसे सिरसे खून बहेगा पर मालका एक

खोटा पैसा भी न पायेगी। दूर हो यहासे, मैं तेरा मुंह भी नहीं देखना चाहता। हाँ, यदि आज तू विधवा बनकर आई होती तो शायद मैं......

ललिता—(उठकर) बस बाबूजी, अब मैं नहीं सह सकती। आज मैं यदि आपकी कन्या न होकर किसी ग़रीब बापकी बेटी होती और उसे अपना दुखडा सुनाती तो वह आपकी तरह कलेजेको छेद देने वाली ऐसी बात कभी न कहता। स्वामी खोकर मैं सुख भोग करूंगी! भगवान न करे ऐसा सुख किसी स्त्रीको भोगना पड़े। चूल्हेमें जाय मकान, चूल्हेमें जाय वंशकी कीर्ति। मैं स्वामीको लेकर पेडके नीचे रहूंगी, दूसरोंके जूठे बर्तन मलकर उनका पेट भरूंगी पर, अब इस जीवनमें "बाबूजी" कहकर कभी आपके दरवाज़ेपर न आऊंगी। भगवानने जितना कष्ट भाग्यमें लिखा है, सिर झुकाकर सब सहूंगी। जब न सह सकूंगी, अनाहार रहकर प्राण दे दूंगी; पर इस घरमें पैर न रखूंगी। चाचाजी, किसी मज़ूरिनको साथ कर दीजिये, मैं अभी चली जाती हूं।

गगननाथ—बेटी, बापके घरसे खाली मुंह नहीं जाना होता।

ललिता—बापका घर समझ कर ही आई थी चाचाजी, पर... अच्छा—बाबूजी विदा!

(पैर छूकर जाना)

रामनाथ—(स्वगत) घरके सारे गहने बेचकर भी क्या ललिता बेटीकी इज्जत नहीं बचाई जा सकती। (जाना)

कामता—कलजुग! पूरा कलजुग आ गया! शादी करनी ही होगी।)

चतुर्थ दृश्य

[स्थान—रेसकोर्सके पास वाला रास्ता]

गौरी—रामकिशोर बाबू, रामकिशोर बाबू! (रामकिशोरका वापस लौटना) कहो आज कैसे रहे?

रामकि०—कैसे क्या रहे भाई, तक़दीरमें जब हार लिखा कर आये हैं तब जीतेंगे कैसे। जो कुछ घरसे लाया था, सब दे दिया। यहांतक कि ट्रामके लिये भी पैसे नहीं बचे। पैदल ही घर जा रहा हूं।

गौरी—देखो भाई, एक बात कहता हूं, बुरा न मानना। जब यह रोज-रोजका धन्धा हो गया है तब इसके लिये कोई न कोई उपाय कर डालो। क्योंकि रेस खेलना न तो तुम्हारा छूटेगा और न मेरा। घरमें भी कोई क़ारूंका खजाना नहीं है, जो बराबर रुपये मिलते जायेंगे।

रामकि०—तो तुम्हीं कोई उपाय बताओ?

गौरी—उपाय तो है, पर करो तब न?

रामकि०—पहले सुनूं भी।

गौरी—उस दिन रेसमें मेरे साथ एक औरत आई थी, मोहनी उसका नाम है। बडी मालदार है। (इशारेसे बताकर) इतनी-इतनी कितनी ही सन्दूकोंमें ठसाठस दौलत भरी पड़ी है। और साथ ही वह तुमपर फिदा भी है। जब जाओ तब तक़ाज़ा जैसे भी हो उन्हे ले आओ। मैं शरमके मारे तुमसे कुछ नहीं कह सकता। न जाने तुम क्या सोचो।

रामकि०—पर...

गौरी—पहले पूरी बात तो सुन लो। उसके यहां डनकन साहब नामके एक भले आदमी आते हैं। ऐसा कोई ओनर या जाकी नहीं जिससे उनकी जान-पहिचान न हो। अगर तुम उचित समझो तो आज ही मेरे साथ चलो। डनकन साहबसे Tip (टिप) पूछकर दोनों ही बाज़ी लगावें; नफ़ेमें आधा-साझा।

रामकि०—पर, अगर कहीं ललिताको खबर लगी तो...

गौरी—तुम भी यार निरे बुद्धू ही रहे। इतने बड़े हो गये, पर बातें करते हो बच्चोंकी तरह। क्या नोखेकी तुम्हारी ही स्त्री है, मेरे नहीं? पर मजाल क्या जो मेरे काममें ज़रा भी चूं करे? वह तुम्हारी स्त्री है या तुम? भैया, स्त्रियोंको ज़्यादा मुंह लगाना ठीक नहीं। फिर उसे तुम छोड़ तो रहे ही नहीं हो। Business point of view से उसके यहां जानेमें क्या हर्ज है?

रामकि०—अच्छा वह मोहिनी है कौन?

गौरी—है कौन, एक भले घरकी औरत है। वह क्या ऐसे-वैसोंसे मिलती है। यह तो भगवानकी कृपा समझो जो तुम पर लट्टू हो गई है। वह अपना सारा धन—धन ही क्यों, तन, मन,धन सब तुमपर न्यौछावर किये बैठी है। एक बार मेरा कहा मानो—चलकर देख आओ न। फिर न तबियत हो न आना। आज कल तुम भी पैसे-पैसेसे तंग हो—कहांतक बीवीके आगे हाथ पसारोगे। मर्द बच्चे हो—जहां चार पैसे मिलें, वहीं जाना चाहिये।

रामकि०—पर मेरी ललिता मुझे प्राणोंसे बढ़कर चाहती है। उसका मुझपर पूरा पूरा विश्वास है। उसे इस प्रकार धोखा देना... भाई माफ़ करना मेरी आत्मा कबूल नहीं करती।

गौरी—हः हः हः हः ! तुम अभी कच्चे उमरके हो। यहां दुनियां खाने बैठा हूं। औरतके समान हिंसा करने वाली दूसरी जाति नहीं है। तिरिया-चरित्र हम तुम क्या भगवान भी नहीं जान सकते। यह एक आंखसे रोती है तो दूसरीसे हंसती है। मेरा कहा मानो—इनके फेरमें न पड़ो नहीं तो कौड़ीके तीन-तीन हो जाओगे। महात्मा तुलसीदासने सच ही कहा है "ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी। ये सब ताड़नके अधिकारी।"

रामकि०—लेकिन न जाने क्यों...

गौरी—मैं तुम्हें एक राह [illegible]। जिसे तुम

दूधकी धोई समझ रहे हो, वह ऊपरसे अमृतका घट है; पर भीतर उसके हलाहल विष है।

रामकि०—(गौरीकी गरदन पकड़कर) क्या कहा ? मेरी स्त्रीकी बदनामी ! अभी जानसे मार डालूंगा।

गौरी—(गला छुड़ाते हुए) अरेरे छोडो छोड़ो ! यह क्या करते हो ? मैंने तो योंही मजाकमें कह दिया था। आओ मोहिनीके यहां चले।

रामकि०—पहले कसम खाओ कि अब कभी ऐसी बात न कहोगे।

गौरी—कह तो दिया अब भूलसे भी कभी ऐसी बात न कहूंगा। अब तो चलो (स्व०) बच्चू, अगर तुम्हारा सर्वनाश न किया तो मेरा भी नाम गौरीनाथ नहीं।

पंचम दृश्य

[स्थान—ललिताका मकान]

(ललिता ईश्वरसे प्रार्थना कर रही है)

मेरी सुन लो दीनानाथ.......

दीन जनोंके तुम रखवारे।

दीन-दयाल नाथ प्रभु तुम हो मैं हूं दीन-अनाथ। मेरी सुन लो

मात-पिता स्वामी सब छूटे रहा न कोऊ साथ।

जैसे मीन नीर बिन तड़पत त्यों तड़पत दिन रात ॥

हे [illegible], दीनपाल नाम तव, तीन लोक-विख्यात।

दया करो प्रभु संकट टारो विनती करत हूं नाथ। मेरी सुन०।

ललिता—तीन दिन, तीन रातें बीत गईं, पर वे नहीं आये। यह अभागिनी जो केवल उनके दर्शनको ही सुख मानकर जीवित है क्या भगवान वह सुख भी इससे छीन लेंगे?

(नेपथ्यमें केशव—'बहिन बहिन')

भीतर चले आओ भाई।

(केशवका प्रवेश)

केशव—बहन, यह पांच रुपये दस आने लो। इस बार सूत खूब महीन कता था, इसीसे दस आने पैसे ज्यादा मिले हैं।

ललिता—भैया, मन तो थिर रहता नहीं, जैसे-तैसे जल्दीमें कात देती हूं। अगर मनमें शान्ति रहे तो इससे भी अच्छा सूत काता जा सकता है और फिर यह सूत कातना तो नहीं एक बेगार है—पेट पालनेका साधन है।

केशव—अच्छा बहिन, अब मैं जाता हूं। फिर कब आऊं?

ललिता—तीन चार दिन बाद।

केशव—बहन, अगर किसी चीज़की दरकार हो तो किसी बातका संकोच न करना। मैं तुम्हारे छोटे भाईके समान हूं।

ललिता—नहीं भैया, अभी मुझे किसी चीज़की ज़रूरत नहीं है। [illegible] रुपये भी हैं। फिर एक ही वक्त तो खाती हूं, फिक्र क्या है [illegible]।

केशव—अच्छा, तो मैं जाता हूं ([illegible]

[illegible]

रामनाथ सेठ है।

ललिता—उन्हे यहीं भेज दो।

केशव—अच्छा बहिन [प्रस्थान]

[रामनाथ सेठका आना, ललिताका प्रणाम करना]

रामनाथ—सौभाग्यवती हो बेटी ! आज गज़ट देखनेसे मालूम हुआ, परसो नीलामकी तारीख है। मैं ही क्यों न बोली बोलकर मकान ले लूं ?

ललिता—पर उससे लाभ क्या होगा चाचाजी ? आप जो अपनी सारी जमा-पूंजी खर्च कर नीलामकी बोली बोलेंगे सो आपके रुपये फिर कैसे अदा होंगे ?

रामनाथ—मकान तो हाथमें कर लूं। न होगा, अच्छे दाम मिलने पर फिर किसीके हाथ बेच दूंगा।

ललिता—इसलिये चाचाजी, अगर मेरे भविष्यका ख्याल कर आप यह काम करते हों तो न कीजियेगा। हां, यदि आप यह समझते हों कि इससे वे ऋणसे मुक्त हो जायेंगे तो भले ही ..

रामनाथ—ऐसा कैसे हो सकता है बेटी, उसका देना तो कम नहीं है। अच्छा डिग्रीदारोंको कितने रुपये देने हैं ?

ललिता—करीब पैंतालिस सौ रुपये। हैंडनोटके भी करीब पचीस सौ रुपये देने हैं।

रामनाथ—[illegible]

ललिता—मकान बिक-बिकाकर जो बाकी बचेगा, उसीसे मेहनत-

मजदूरी कर स्वामीका देना चुका दूंगी। किसीका एक पैसा भी न रक्खूंगी।

रामनाथ—यह तू क्या कहती है बेटी ? तेरी बातें सुनकर तो छाती फटी जाती है। मेरी सोनेकी बेटी, तू दुख सहेगी ? हे भगवान !!

ललिता—मेरे भाग्यमें ही जब दुख लिखा है, तब आप क्या कर सकते हैं ? मेहनत-मजदूरी करके भी अगर उनका कर्ज अदा कर सकी, तो समझूंगी, जिनका शरीर है, उनके कुछ काम आ सका। मकान बेच-बिकवा कर जो रुपये बचे, उन्हींमेंसे आप कुछ ऐसा प्रबन्ध कर दें कि पावने-दार महीने-महीने आकर थोड़े-बहुत रुपये ले जाया करें। मेरे स्वामीपर वे नालिश न करें, ऐसा ही कुछ उपाय कीजिये; यही मेरी आपसे भीख है।

रामनाथ—ओफ ! तेरी बातें सुनकर रुलाई आती है। और उधर, बाबूजी दूसरी शादीकी तैयारी कर रहे हैं। छि छिः (आसू पोछकर) रामकिशोर कहां है ? उस दिनकी बातें क्या उससे कही थी ?

ललिता—नहीं मैंने उससे कुछ नहीं कहा।

रामनाथ—अच्छा किया बेटी। कहनेसे लाभ भी क्या था ? अच्छा मैं चलता हूं बेटी. (ललिताका प्रणाम करना) सौभाग्यवती हो।

ललिता—बाबूजी फिर ब्याह करेंगे ?

रामनाथ—देखो... (प्रस्थान)

(रामकिशोरका प्रवेश)

रामकि०—क्यों सती-कुलवन्तीजी, किसके साथ प्रेमालाप हो रहा था ?

ललिता—(चौंककर) कौन ?

रामकि०—अब क्यों पहचानोगी...अभी यहांसे कौन गया है ?

ललिता—[illegible] जी।

रामकि०—उस मालीसे इतनी मुहब्बत क्यों ?

ललिता—तुम्हें आज क्या हो गया है ? कैसी बे-सिर-पैरकी बातें करते हो ? इतनी जल्दी तुम नीचे गिर गये ? ओफ़ ! जिसके कारण मैं बाबूजीसे बुरी बनी वही मुझे......

रामकि०—और किसे क्यों ? अपने प्राणप्यारे, नये यारके लिये कहो न।

ललिता—छिः छिः ! तुम्हारे मुंहसे ऐसी बात कैसे निकली ? जाओ, मुंह धो आओ। ओह एक ही महीनेमें इतना अधःपतन ! जिस मुंहके लिये मैं संसारको तुच्छ समझती हूं, वही मुझे... ...

रामकि०—वाह-वा ! क्या कहने हैं ! अभी तो सूत कात कर ही देवी हो अब रास्तेमें निकलना। मन-चाहे यारोंको घर बुलाकर मौज उड़ाती हो और अभी कालिख-लगे मुंहसे मेरी पूजा भी करती हो। धन्य है तुम औरतोंकी जात, धन्य है तुम्हारी माया, धन्य है तुम्हारा चरित्र !

प्रकाशक—

रामचन्द्र शुक्ल वैद्य

आदर्श हिन्दी पुस्तकालय

२।३, चित्तरञ्जन एवन्यू (साउथ)

कलकत्ता।

मुद्रक—

दुलीचन्द परवार

"जवाहर प्रेस"

१६१।१ हरीसन रोड,

कलकत्ता।

ललिता—तुम्हारा हृदय पत्थरका है; तभी इस निर्जीव शरीरको व्यंग्य बाणोंसे वेध रहे हो। मैंने किसके लिये यह काम किया है, किसके लिये मैंने अपने बाबूजीको पराया बनाया है, किसके दर्शनकी साधसे यह मुर्दा-सी देह लिये मैं रात दिन दरवाजेपर बैठी रहा करती हू? जिन रुपयोंसे तुम बाज़ारू वेश्याओंके साथ मौज-बहार करते हो, क्या तुम नहीं जानते, वह इसी मृत-देहके रक्तसे उपार्जित परिश्रम के रुपये हैं? ओह! अब मैं नहीं बोल सकती, अब एक शब्द भी बोलनेकी शक्ति मुझमें नहीं रही....

गौरीनाथ—(नेपथ्यमें) मैं और कितनी देर खड़ा रहू, रामकिशोर बाबू! देना हो तो दो नहीं तो साफ़ जवाब दे दो।

रामकिशोर—(ललितासे) देखो, यह सब मिमियाना छोड़ो। मेरा वह कागज़ कहा है?

ललिता—कैसा कागज़?

रामकिशोर—ओहो! जैसे आकाशसे गिर पड़ी। अरे वही कम्पनी वाला पैंतालिस रुपयाका कागज़?

ललिता—मेरे बक्समें है। पर वह तो तुम्हारा नहीं है। दूसरेका—बतौर अमानत रखा है।

रामकि०—इससे क्या? वह मेरा है। तेरा भी नहीं, तेरे बापका भी नहीं।

ललिता—मरते समय बाबूजीने यह कागज़ मुझे सौंप कर कहा न [illegible] थी कि जिसका यह कागज़ है, उसे [illegible]

समाप्त हो जानेपर सही-सलामत सहेज देना।

रामकि०—उनका मामला निपट गया है। वे बाहर खड़े हैं। उन्हें इसी वक्त कागज देना होगा। (नेपथ्यमें पुकार कर) गौरी बाबु, भीतर आकर अपना कागज सहेज लीजिये।

[illegible]—घरके अन्दर किसे बुलाते हो? कागज मैं किसीको न दूंगी। अगर देना ही होगा तो अदालतमें जाकर हाकिमके हाथों दे आऊँगी।

(गौरीनाथका प्रवेश)

गौरी—आप क्यों व्यर्थमें बात बढ़ाती हैं? अमानतका कागज है, देकर आप भी निश्चिन्त हो जाइये और रामकिशोर बाबूको भी निश्चिन्त कीजिये।

[illegible]—([illegible]) आप कौन हैं? मुझे मालूम होता है, यह एक षड्यन्त्र है। जिनका कागज है, उन्हें मैं जानती हूं। मैं आज ही उन्हें लिख दूँगी।

[illegible]—ऐसी हठी बुद्धि औरत कहीं देखी है गौरी बाबू?

[illegible]—([illegible]) सो तो देख ही रहा हूं। 'ढोल-गँवार-शूद्र-पशु-नारी—ये सब ताड़नके अधिकारी'—महात्मा तुलसीदासके शब्द हैं—सीधी उंगलियोंसे घी न निकलेगा।

[illegible]—मुझे पक्का विश्वास है, आप एक षड्यन्त्र रच कर मेरे स्वामीको विपत्तिमें फँसाना चाहते हैं। अगर आप अपना भला चाहते हों तो इसी समय चले बाहर निकल जाइये।

गौरी—रामकिशोर बाबू, एक भले आदमीको घर बुलाकर उसका इस तरह अपमान कराते हैं। अच्छी बात है; मैं पुलिसमें जाता हूं। मेरे रुपये हजम करना दाल-भातका कौर नहीं है।

रामकि०—चाभी कहां है ? देती है या नहीं ?

ललिता—नहीं।

रामकि०—नहीं ? अच्छा गौरी बाबू, तुम ज़रा बाहर ठहरो। मैं कागज़ लेकर फ़ौरन आता हूं।

गौरी—अच्छी बात है (रामकिशोरको अलग ले जाकर) सीधी उंगलियों घी निकलेगा। (जाना)

रामकि०—(ललितासे) क्यों री हरामज़ादी, तेरी इतनी हिम्मत ! एक भले-आदमीको जो जीमें आयेगा, सुनाकर अनादर करेगी ? यारोंसे मेल कर सवा गज़की छाती हो गई है क्यो ? एक लातमें सारी हेकड़ी भुला दूंगा। देती है चाभी या नहीं ?

ललिता—तुम्हारे जो जीमें आवे कह लो; पर प्राण-रहते मैं चाभी न दूंगी।

रामकि०—देख एक बार फिर कहता हू चाभी दे दे, मेरा गुस्सा न बढ़ा।

ललिता—प्राण रहते मैं चाभी नहीं दूंगी।

रामकि०—(ललिताको धक्का देना और उसका गिर पड़ना) नहीं देगी ? (लात मारना) नहीं देगी ?

ललिता—ओ मा !....प्राण रहते मैं चाभी न दूंगी।

रामकि०—(गला दबाना) तो ले मर ....

ललिता—मार डालो - मार डालो....ओः ओः....

रामकि०—(गला दबाकर) प्राण रहते चाभी न दूंगी—क्यों ? अच्छा (दोनों पैरोंसे ललिताके दोनों हाथोंको दबाकर उसके आंचलसे चाभियोंका गुच्छा खोल कर भीतर जाने लगना—ललिताके बाधा देनेपर उसे गिरा देना—ललिताका गिर पड़ना और रामकिशोरका भीतर जाकर कागज़ ले आना)

रामकि०—(ललिताके सामने चाभियोंका गुच्छा फेंककर) ले अपनी तिजोरी की चाभी....

[illegible]—सुनो, सुनो मेरी बात ..

[illegible]—([illegible] मारकर) दूर हो ! (प्रस्थान)

षष्ठम् दृश्य

स्थान-माधवप्रसादका घर

[[illegible] —गुणवती उनके सिरके बाल चुन रही है]

[illegible]—[illegible]सुनो, तुम्हारे सिरके तो सारे बाल पक गये। इतनी देरसे चुन रही हूं, पर खतम ही नहीं होते। अच्छा [illegible] सुनो, अन्नाके सिरका तो एक बाल भी अभीतक सफेद नहीं हुआ, यह क्यों ?

[illegible]—[illegible] मेरी तरह दिन-रात धूपमें दौड़ना नहीं [illegible] उनके [illegible] अभीतक काले हैं।

सरस्वती—झूठ ? एकदम झूठ। एक कदम तो तुमसे पैदल चला नहीं जाता। जरा सी दूर जाना होता है तो गाड़ी पर जाते हो और कहते हो घाम-घाम घूमता हूं। गाड़ीमें बैठकर जानेसे घाम कैसे लगेगा। अच्छा बाबूजी, ये किसान तो दिनभर धूपमें खेती करते हैं, उनके बाल क्यों नहीं पकते ?

माधव—उनके सिरपर भगवान जो छाता लगाये रहते हैं।

सरस्वती—सच कहते हो बाबूजी। इसीसे लोग कहते हैं कि, 'गरीबोंके भगवान' हैं, क्यों न बाबूजी ? अच्छा बाबूजी, बड़े आदमियोंके क्यों भगवान नहीं होते ?

माधव—बड़े आदमियोके भगवान हैं रुपया। क्यों रे सुरू, तू मुझे ज्यादा चाहती है या अम्मा को ?

सरस्वती—जब तुम्हारे पास रहती हूं तो अम्माको भूल जाती हूं, जब अम्माके पास रहती हू तो तुम्हें भूल जाती हूं और जब पागलकी बाते सुनती हूं तब तुम्हे और अम्मा दोनोंको भूल जाती हू। पागलको अम्मासे छिपाकर मैंने पानी पीनेके लिये एक लोटिया दी है बाबूजी।

माधव०—अच्छा किया बेटी। सुरू, तेरी अम्माने तुझको जो नया गाना सिखाया है जरा सुना तो।

सरस्वती—ऊं, ऐसे नहीं। पहले कुछ देने कहो तब सुनाऊंगी।

माधव—क्या देगा बोल ?

सरस्वती—आपका ताजीन खुल गया है। [illegible] गानेवालोंको गर-

मीमें पानी न मिलनेसे वे मर जायगे। तालाबमें पानी भरवा दो, बाबूजी !

मालन—क्यों रे सुरु, उन्हें पानी न मिलनेसे तुझे क्यों कष्ट होगा?

सरस्वती—वाह बाबूजी, हमें प्यास लगने पर अगर पानी नहीं मिलता तो छटपट करने लगते हैं कि नहीं ? वे गरीब हैं तो क्या उन्हे कष्ट नहीं होता ?

मालन—(स्वगत) हे जगदीश ! यह पुण्य-प्रतिमा किस घरमें उजाला करेगी, यह तुम ही जानते हो। (प्रकट) अच्छा बेटी, ताला में जल भरवा दूंगा, अब गाओ।

सरस्वतीका गाना

कृष्ण कृष्ण, राम राम, परम मधुर नाम बोलो......

गोविंद गोविंद, केशव केशव, गोपाल गोपाल, माधव माधव,

दामोदर, श्रीधर, वंशीधर,

श्याम नारायण, वासुदेव,

नंद नन्दन, जगनन्दन, वृन्दावन, वृन्दावन—

[illegible] धाम ॥

([illegible]माका प्रवेश)

[illegible]—सुनती हो? तालाबका पानी सूख गया है। अगर अभीसे उसे बचानेका प्रबन्ध न किया गया तो गांववालोंको गर्मीमें पानी न मिल सकेगा।

[illegible]—[illegible], [illegible] सुना कि कुछ तुम्हारे सिरके बाल [illegible] है, क्यों नहीं मैं समझ गई कि शनि ठकुराइन

विना पांच सेरका कड़ा-छड़ा लिये सिरसे न उतरेंगी।

माधव—देखो, ऐसी बातें न कहो। उसकी बातोंने आज मेरी आंखोंसे आँसु निकलवा दिया।

लक्ष्मी—तुम्हारी आंखोंमें आँसू आते कितनी देर लगती है। अब कुछ काम-काजकी भी बात होगी या दिन-रात बाप-बेटीका दुलार ही होता रहेगा? (सरस्वतीसे) जा सुरू, राजूको यहां भेज दे। (सरस्वतीका जाना)

(राजूका प्रवेश)

लक्ष्मी—राजू, अपने चाचाजीको बता दे कौन सा लड़का ठीक किया है?

राजू—चाचाजी, सुरूके लिये ऐसा अच्छा वर ठीक किया है कि...

माधव—अरे ब्याह तो एक दिन करना ही है। पर देखता हूं जितने दिन ताना-रीरी करनेमें निकल जाय, उतना ही अच्छा है।

लक्ष्मी—यह क्या कहते हो? लड़कियोंका ब्याह छोटी उमरमें ही अच्छा लगता है। ताड़ जैसी लड़कियोंका ब्याह भी कोई ब्याह है?

माध०—छोटी अवस्थामें...

लक्ष्मी—यह तो कहनेकी बात है।

राजू—चाचाजी, एक लड़केका पता लगाया है। देखनेमें कार्तिक, बड़ा खानदानी, उमर भी बीस-बाईससे अधिक नहीं है। मुंहसे बोलना तो जानता ही नहीं, मानो काठका

हा ही-ही करिहैं, सराब पीहैं औ कहेसे तिनिक जैहैं।
अरे लाखन रुपैया पासमें अहै न आगे नाथ न पाछे
पगहा, अकेली जीव। कहां तौ कौनों तीरथ-धाम जायके
राम-नाम जपै क चाही कहा ई नाच रङ्ग ! हे भगवान !

(मोहिनीका प्रवेश)

इनी---क्या है रे, क्या बक-बक कर रहा है ? तुझे हजार बार
मना कर दिया कि चुप-चाप काम करना तो कर नहीं
तो अपना रास्ता ले। मेरा रुपया है जो चाहूंगी करूंगी,
तेरे बापका क्या ? बड़ा चला है उपदेश देने। जा अपना
काम कर। (मैकूका जाना) बेवकूफ इतना भी नहीं
जानता कि जिस शरीर, जिस रूपको बेच-बेंचकर मैंने
इतना धन इकट्ठा किया है, उससे इस आखिरी वक्त राम-
राम रट होगी ? हां, शुरूमें अगर कोई भलामानुस मुझे
गिरनेसे बचा लेता तो शायद मैं बच सकती थी। पर
उंह, अब वह गई-बीती बात हो गई। अब भगवानने
ही मेरे भाग्यमें वेश्या होना लिख दिया तब सुहागिन
कहांसे बनती। अब तो मेरा काम है, बसी-बसाई गृहस्थी
को उजाड़ना, घरकी देवियोंसे उनके पतियोंको अलग
कर, उनका सर्वस्व लूट कर, रास्तेका भिखारी बना देना।
आज और एक बछड़ेको फंसनेकी बात है। गौरीनाथ
खबर दे गया है। सुनती हूं उसके पास पैंतालिस रुप-
योंका अपना कागज है। आने दो, ऐसा फन्दा डालूंगी

कि घरका नाम तक न लेगा। यहीं पड़ा-पड़ा मेरा जूठन न खाया करे तो मेरा भी नाम मोहिनी नहीं। (नेपथ्यमें कुण्डी खटखटानेकी आवाज़) शायद आ गया। मैकू, मैकू, अरे कहा मर गया।

(मैकूका प्रवेश)

मैकू—का है मलकिन ?

मोहिनी—अरे हाथमें झाड़ू लेकर क्यों आया ? झाड़ू मारेगा क्या ?

मैकू—(स्वगत) हमार बस चले तो इन ससुरनका झाडुऐ मारी। (प्रगट) घर बुहारत रहेंन, कौनो काम है का ?

मोहिनी—जा झाड़ू बाहर रखकर दरवाजा खोल दे। गौरी बाबू आये हैं।

मैकू—(स्वगत) हुः गौरी बाबू ! ससुरऊ नाती बाबू बने हैं आजौ कौनो का फँसायके लावा होई।

(मैकू बाहर दरवाजा खोलता है, गौरी, रामकिशोरका प्रवेश। मोहिनी बिठाती है, मैकू जाने लगता है, मोहिनी पुकारती है)

मोहिनी—अरे मैकू जरा पान-दान तो दे जा। (रामकिशोरसे) आइए बाबू बैठो।

मैकू—(स्वगत) कुटिया कर नौकरी भी जीका जञ्जाल है। (जाता)

गौरी—बैठिए न रामकिशोर, कबतक खड़े रहोगे ?

मोहिनी—इधर आइए जूते उतार कर अच्छी तरह बैठिये। इसे भी अपना ही घर समझिये।

दो शब्द

यह हर्षका विषय है कि हिन्दी भाषामें नाट्य-साहित्यकी उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। हिन्दीके अच्छे-अच्छे लेखकों द्वारा लिखित कई नाटक उच्च कोटिके निकले हैं और निकल रहे हैं। किन्तु, भाव, भाषा तथा कलाकी दृष्टिसे ये नाटक उच्च कोटिके होनेपर भी, नाट्य-मञ्चपर नहीं लाये जा सकते। नाट्य-संस्थाओंके सन्मुख यह कठिनाई सदा उपस्थित रहती है। उन्हें हिन्दीमें ऐसे नाटक बहुत कम मिलते हैं जिन्हें वे बिना रद्दोबदल किये, सरलता-पूर्वक नाट्य-मञ्चपर खेल सकें। इसी कठिनाईको लक्ष्यमें रखकर मैंने यह नाटक लिखनेका साहस किया है। बहुत दिन हुये मैंने बंग-भाषामें श्री [illegible]-घोष रचित 'पतिता' नामक नाटक देखा था, जोकि मुझे बहुत पसन्द आया। उसी समय मैंने उसके आधार पर हिन्दीमें एक नाटक लिखनेका दृढ़ संकल्प कर लिया। मैंने इस नाटकको हिन्दी-भाषा-भाषी जनताके उपयुक्त बनानेकी यथा-शक्य चेष्टा की है, किन्तु मुझे कहाँ तक सफलता मिली है, इसका विवेचन सुविज्ञ पाठक ही कर सकेंगे। मेरे मित्रोंने तो इस नाटकको इतना पसन्द किया कि इसका अभिनय करनेकी ठान ली। किन्तु कई एक अड़चनें आ पड़नेके कारण अभी तक यह नहीं खेला जा सका। पूज्य पिताजीके [illegible]-

(रामकिशोरका बैठना—मैकूका पान-दान लाकर रखना और चले जाना)

गौरी—लो मोहिनी बीबी, जिसके लिये तुम मेरी जान खा रही थीं, उसे लाकर तुम्हारे सामने हाज़िर कर दिया। अब तुम जानो और यह जानें।

रामकिशोर—इसके क्या माने ?

मोहिनी—माने मैं समझाये देती हूं—गौरी बाबूने ठीकही कहा है। उस दिन रेलमें आपको देखते ही और यह जानकर कि आप गौरी बाबूके दोस्त हैं मैंने (गौरीनाथकी ओर इशारा कर) इनसे कह रक्खा था कि, जैसे भी हो एक बार आपको यहां ले आवें। रामकिशोर बाबू, आप आश्चर्य न करें, मैं सच कह रही हूं।

रामकि०—मगर आप तो .....

मोहिनी—वेश्या हूं यही न ? क्या वेश्या प्रेम करना नहीं जानतीं ? उनके हृदय नहीं होता ? यह मैं मानती हूं कि, ज्यादातर वेश्यायें रुपयोंको ही सब कुछ समझती हैं। पर सभी वैसी नहीं होती। जिसे वे दिलसे प्यार करती हैं, उसके लिये अपने प्राण तक न्यौछावर कर देनेमें नहीं हिचकती। फिर मैं कोई बाज़ारू वेश्या नहीं हूं। अगर न विश्वास हो तो अपने दोस्त गौरी बाबूसे पूछ लीजिये।

गौरी—सो मैंने इनसे पहले ही कह दिया है। दरअस्ल इन्हें आपसे [illegible] है। यार रामकिशोर, अपनी किस्मत

सराहो जो मोहिनी बीबी-जैसी औरत तुमको चाहती है।

रामकि०—अच्छा तो इस समय चलता हूं, (स्व०) बड़ी तबियत घबरा रही है (जाना चाहता है, मोहिनी रामकिशोरका दुपट्टा पकड़ कर रोकती है)

मोहिनी—इतनी जल्दी क्या है? आये हैं तो घड़ी भर बैठिये, फिर चले जाइयेगा। (नेपथ्यकी ओर पुकारना) अरे मेकू ज़रा पान तो दे जा--पानदानमें पान ही नहीं हैं। कैसा बजड़ नौकर है। (मेकू आकर पानदान में पान रखता है मोहिनी लगाती और बोलती जाती है) मैं कोई होआ तो हूं नहीं जो आपको खा जाऊंगी।

मेकू—(स्वगत) होआ नाहीं तो का हो। देखै में छोटी-छुटुलकीसी मुदा पेट अस गहर होवै कि जौन आवै तौने समाय जाय (रामकिशोरकी ओर आँखका इशारा कर) तुम्हारका निमान? हूं घर फेर लछमी क छांड़ क चला हैं रण्डी-बाजी करे! कुछ दिनामें जर-बुताय क ठिकाने लगिहौ अस होस याद (जाना)

मोती—ओह! इस यादको ऐसी-तैसी! (रामकिशोरसे) यार, तुम थोड़ी देर यहां बैठो। मैं अभी आता हूं। बड़ा ज़रूरी काम है। बस १०-१५ मिनटसे ज्यादा न लगेंगे। (जाना)

रामकि०—इसको इसको मैं भी...(जाना चाहता है, मोहिनी हाथ पकड़ कर रोकती है)

मोहिनी—यहीं बैठो ना। इसलिये इस तरह शर्मानेसे काम न

चकेगा। मैंने सुना है, आप रेस खेलनेके बड़े शौकीन हैं। अबकी ऐसा कीजिये, आप मेरी ओरसे बाज़ी लगाइये। रुपयोंकी कोई फिक्र नहीं—खूब लम्बी बाजी लगे। जितने रुपये चाहिये, ले जाइये। (पान लगाकर देना) लीजिये, पान खाइये। (रामकिशोर पान लेना चाहता है, मोहिनी अपने हाथसे पान खिलाती है) नहीं-नहीं मैं ही खिलाये देती हूं। (रामकिशोरका झिझकना) झिझकिये मत। (मोहिनी जबरदस्ती पान खिला देती है) देखो प्यारे, मुझपर यक़ीन करो। अगर यकीन न हो तो बोलो कलेजा चीर कर दिखा दूं, तुम्हारी ही मोहिनी छवि बसी हुई है। मैं कुछ नहीं चाहती—सिर्फ चाहती हूं तुम्हारा प्रेम! न रुपया न पैसा, न ज़ेवर न कपड़े। यह घर तुम्हारा, धन-सम्पत्ति तुम्हारी, मैं तुम्हारी हूं। बोलो, मुझे प्यार करोगे?

रामकि०—न जाने तुमने ऐसा कौन सा जादू कर दिया है कि मेरा अंग-अंग शिथिल होता जा रहा है। मन होता है यहीं थोड़ी देर आराम करूं। (तकियेके सहारे लेटना—मोहिनी ग्लासमें शराब उड़ेल कर देती है)

मोहिनी—लो मेरे राजा ..

रामकि०—यह क्या शराब? मैं शराब नहीं पीता।

मोहिनी—शराब! ह ह ह, शराब नहीं अमृत है। जिन्हें देखना, ऋषि-महर्षि सभी प्रेमसे पीते हैं। पीते ही शरीरमें नया जोश पैदा हो जाता है। लो .

गौरी—([illegible]) वाह वाह ! (मोहिनीसे) क्यो बीबी, अब तो खुश हुई ? "प्रेम तपन कबहूं बुझे न बुझाये" सूख सूखके कांटा हुई जा रही थी। हर दम 'रामकिशोर बाबू राम किशोर बाबू' की रट। लाओ अब मेरा इनाम।

मोहिनी—क्या बनाते हो गौरी बाबू, मैंने तो पहले ही कहा था कि अगर मेरा प्रेम सच्चा है तो उन्हे जरूर पाऊंगी। सो भगवानने मेरे दिलकी मुराद पूरी कर दी। अच्छा यह बताओ उनकन साहबके यहां गये थे ?

गौरी—वहींसे तो माथा-पच्ची करके आ रहा हूं। उन्होंने फिर बुलाया है, जरा हो आऊं। क्यों रामकिशोर, तुम चलोगे या ठहरोगे ?

मोहिनी—तुम कैसे उजड्डपनेकी बाते कर रहे हो गौरी बाबू। यहां क्या ये जंगलमे बैठे हैं, यह भी तो इन्हींका घर जाओ आज ये यहीं रहेंगे।

रामकि०—पर ललिता.... ..

ललिता—तुम्हारी ललिताको कोई उठाये तो लिये नहीं जाता। ऐसे नहा-धोकर चले आना। (गौरीसे) जाओ तुम क्यों खड़े हो ? [illegible] हो गया, परसों [illegible] है। [illegible] साहबसे मिलना जरूरी है।

गौरी—[illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible]

मोहिनी—मैंने पहले ही देख लिया है। तुम बेफिक्र रहो, चिड़िया अब नहीं उड़ सकती। (गौरीका प्रस्थान)

[illegible]—(स्वगत) अगर ललिता ऐसी होती। सचमुच यह देवी है। वह गवाँरिन—इसके पैरको धोअन भी नहीं है। (प्रकट) प्यारी, तुमने ऐसा जादू डाला है कि चारो तरफ तुम ही तुम दिख रही हो।

मोहिनी—इस [illegible] नाचीजको आसमान पर न चढ़ाओ। अच्छी हू, बुरी हू जो कुछ हू, तुम्हारे सामने हूं। अगर मन भरे अपनाओ न मन भरे ठुकरा दो। आखिर दुनिया ठुकराती ही है।

[illegible]—मोहिनी यह क्या कहती हो ? तुम मेरे दिलकी रानी हो। दुनियां अन्धी है जो ऐसे हीरेको ठुकराती है। अच्छा अब एक गाना सुना दो।

मोहिनीका गाना

मेरे दिलमें न कजा जमाया है तूने।
जिसमें चमन-गुल खिलाया है तूने॥
बसी मेरी आंखोंमें है तेरी सूरत।
बनाकर ये जादू चलाया है तूने॥

मोहिनी—क्या पसन्द आया ?

[illegible]—[illegible] कुछ पूछो मत। प्यारी, (मोहिनीकी ओर बढ़ता है, [illegible] पैर फिसल पड़ता है)

मोहिनी—(कागज़ उठाकर) यह क्या है? (देखकर) तुम भी पूरे बमूभोलानाथ हो। इसे इतनी बे-ख़बरीसे रखते हो? यह तो कहो खैर हुई जो यह यहां गिरा। अगर कहीं रास्तेमें गिरा होता तो आज सारा खेल ही खत्म था। अब मैं तुम्हे न दूंगी। तुम्हारा क्या ठीक। मैं सम्हाल कर बक्समें रखे देती हूं, जब दरकार पड़े ले लेना।

रामकि०—कुछ परवाह नहीं, कुछ परवाह नहीं ...

मोहिनी—(सहारा देकर ले जाना) चलो चलकर आराम करो।

रामकि०—चलो-चलो . (प्रस्थान)

मैकू—अरे बनरना पार! घरकी लछमी मेहरिया छाड़ि क आये रोवें पतुरिया क 'पडेम' पावें। न पकरा, तोका अन्न परेम मिलो कि पयके खाय क निकारे जइहो।

मैकूका गाना

चलो देख लेउ मरदअनकी कारीगरी,
घरकर मेहरिया रोवै परे मा, खोजिहैं पतुरिया जोबन-भरी। चलो।
कलकत्ता बिचारे खाये न पावैं, रण्डीके संग बाबूजी मौजें उड़ावैं॥
बाप दादनके मूड़ पर बाढ़िया फिरी॥ चलो०॥
हीरा नाना जो पैं धरैं, आग पतुरियाके मेंटे चढ़ै हैं।
(ऐसे) हर-औरत पर कोई न मारै धरी॥ चलो०॥

अष्टम दृश्य

[स्थान—सड़कका किनारा]

(डन्कन रास्तेमें एक तरफ खड़ा सिगार पी रहा है—गौरीका प्रवेश)

गौरी—गुडमार्निंग मि० डन्कन।

डन्कन—हैलो मि० गौरीनाथ! गुडमार्निंग, गुडमार्निंग।

गौरी—कहो क्या हाल है?

डन्कन—[illegible] तुम बोलो केसा माफिक, हाम क्या जानटा? मोहिनी बीबीका क्या खबर?

गौरी—[illegible] क्या पूछते हो? उसकी हमेशा पाचों अंगुलियां घीमें रहती हैं। फिर एक असामी फंसाया है, [illegible] हाथ लगी है। अपनी रहमत बीबीका [illegible] क्या रंग-ढंग है?

डन्कन—[illegible] ओरटीका बाट मत बोलो। हाम छोड़ दिया।

गौरी—[illegible] यार, तुम भी बड़े विचित्र आदमी हो। अब उस [illegible] गुजर कैसे होगा? और तो और, तुम्हारा क्या हाल होगा?

डन्कन—O! [illegible] many to prostitute me (ओह [illegible] मनी टु प्रास्टीट्यूट मी)

गौरी—[illegible] बताओ तुमने अंग्रेजी कहां सीखी है? ऐसी [illegible] बोलते हो कि अगर स्वर्गसे स्वयं शेक्सपियर [illegible] आवें तो भी एक शब्द न समझ सकें।

(स्वगत) कैसा वेवकूफ है ! Subsitute (सब्सीट्यूट) के माने Prostitute (प्रास्टीट्यूट) से लगाता है। (प्रकट) खैर, छोडो इन वातों को। चलो तुमको इसी वक्त मोहिनी वीवीके यहा चलना होगा। उसने रामकिशोर—अरे उसी चण्डूलसे, तुम्हारी बड़ी लम्बी-चौडी तारीफ़ की है। उसने तुमको रेसका भगवान तक कह दिया है। चलो कोई सीधी सी Tip (टिप) बता कर वेड़ा पार करो। [डन्कन कुछ सोचता है] क्यों, क्या सोच रहे हो ?

डन्कन—कुछ नहीं कुछ नहीं। टुम जैसा माफ़िक वोलेगा, आम वैसा माफ़िक करेगा। मगर रूपी मांगटा रूपी।

गोरी—(स्वगत) सालेका वाप कोचवानी करते करते मर गया और यह साला साहवी ठाट-वाटमें मरा जाता है। पर है बड़ा हिकमती। वालूमेंसे तेल निकालता है (प्रकट) तो आओ चलो।

डन्कन—Alright come· ·······

नवम दृश्य

[स्थान—मोहिनीका मकान]

(मोहनी बैठी पान लगा रही है, रामकिशोर हारमोनियम बजा रहा है। सामनेसे पहले गौरीनाथका प्रवेश)

गौरी—हाय-हाय, मार डाला तुमने। उंगलियाँ तो ऐसी चलती हैं कि मन चाहता है काट कर रख लूं।

मोहिनी—जाओ जाओ, गढेयामें मुंह धो आओ। बड़े चले हैं उंगलिया काटने। यह शरीर, ये उंगलियां अब मेरी हैं। मैं इन्हें सोनेसे मढ़ाकर रक्खूंगी (उंगलियोंको लेकर कलेजेसे लगाना)

(डन्कनका प्रवेश)

मोहिनी—आओ डन्कन साहब, कहा रह गये थे ?

डन्कन—Laboratary (लेबोरेटरी)... ...

रामकि०—क्या आपकी यहां Laboratary है ?

गौरी—अरे यार, तुम अभी नये हो। डन्कन साहबकी English नहीं समझ सकते। यहां लेबोरेटरीके माने Lavotary (लेवोटरी) यानी.......से है।

रामकि०—ओ, यह बात है। वाकई तब तो आप बड़े पढ़े-लिखे हैं।

मोहिनी—खैर, अब कामकी बात होने दो। देखिये साहब (रामकिशोरको बतलाकर) ये मेरे सब कुछ हैं। इन्होंने आते ही मुझपर ऐसी मोहिनी नजर डाली, कि मैं बिना दाम इनके हाथों बिक गई। इन्हें रेस खेलनेका बड़ा शौक है।

धन से पुस्तकमें और भी सजीवता आ गई है। पूज्यवर चाचा पं० गिरधरजी शुक्लने इस पुस्तकका प्रकाशन-भार स्वयं अपने ऊपर ले मेरे उत्साहको बढाया है, इसके लिये मैं उनका आजन्म ऋणी रहूंगा। मेरे परम शुभ-चिन्तक, नाट्य-कला-मर्मज्ञ श्री० परमेष्ठी-दासजी जैनने इस नाटकके अधिकांश गायनोंकी सुन्दर रचना करने की कृपा की है, जिससे लिये मैं उनका हृदयसे कृतज्ञ हूं। मैं अपने हितैषी मित्र श्री० पं० दयाशंकरजी वाजपेईको भी बिना धन्यवाद दिये नहीं रह सकता, जिन्होंने पुस्तकके प्रूफ-संशोधनमें मेरी प्रेम-पूर्ण सहायता की है।

[illegible] पुस्तकसे पाठकोंको तनिक भी रुचि [illegible] प्रतीत हुई तो मैं [illegible] समझूंगा।

और आप हैं इस विद्याके विशारद ! इसलिये इन्हें कोई ऐसो टिप वताइये कि उल्टी पडे ही नहीं। मालामाल होकर घर लौटें। इनके चेहरे पर मैं संजीदगी नहीं देख सकती।

गौरी--(स्वगत) इसे कहते हैं रण्डी ! ऐसा फंदा डाला है कि ये क्या, इनके बाप भी नहीं निकल सकते। (प्रगट) हाँ साहब, कोई Sure tip वताओ।

डन्कन—कुछ परवाह नहीं २ ······आम मोहिनी बीबीके लिये जान तक········

गौरी—(डन्कनसे अलग) अरे चुप-चुप, यह क्या करते हो ? शिकार बहक जायगा।

डन्कन--Oh I see ! very well.........अच्छा बाबू, आम टुमको Sure tip डेगा। गौरी बाबू, टुम काल हमाड़े साठ डेखा करना। मोहिनी बीबी टुम कुछ फिकड मट करो। बैरा ओ बैरा, बोटल लाओ। बीबी मंगाओ।

मोहिनी—अभी आये हो, थोडा सुस्ता लो। लगे बैरा-बैरा कहकर कान फाड़ने। पहले कामकी बात खतम करलो फिर वह तो है ही, उसके बिना तुम्हें चैन कहां ? (गौरीनाथसे) तुम तो पियोगे नहीं गौरी बाबू, आज एकादशी है ?

गौरी—हैं, एकादशी ! बीबी, एकादशी छूट सकती है पर यह नहीं छूट सकती। (रामकिशोरसे) हां रामकिशोर, तब तक गाना ही होने दो। आज तो हम तुम्हारा गाना सुनेंगे।

डन्कन—हां बाबू, सुनाओ। I here

मोहिनी—जब ये लोग इतनी जिद करते हैं तो एक चीज सुना दो। प्यारे, तुम्हारी आवाज़में बड़ा दर्द है। (डन्कनसे) देखो साहब, अबको Sure tip बताना नहीं तो मैं तुमसे न बोलूंगी।

रामकि०—(स्वगत) प्रेमकी साक्षात् देवी हैं। एक ललिता है··· नीच·· ·गवाँरिन······

मोहिनी—क्या सोच रहे हो प्यारे, क्या घरवालीकी याद आ गई?

रामकि०—नहीं-नहीं उस गवार मुच्च··

मोहिनी—बस-बस, मुंह बन्द करो। उस बिचारीको गालियां न दो। तुम्हें मेरे सिरकी कसम, अब कभी उसके बारेमें कुछ न कहना।

गोरी—ओ हो! यह बात है!

डन्कन—Certainly so आलबत्।

गोरी—मानो साक्षात सतीका अवतार हो।

मोहिनी—ऐसे पुण्य मैंने नहीं किये थे गोरी बाबू। करममें तो वेश्या होना लिखा था····सती कहांसे बनती! (एक लम्बी सांस लेकर) खैर, छोड़ो इन बातोंको। प्यारे, एक गाना सुना दो। मैकू, ओ मैकू···

(हाथमें [illegible]ना लिये हुवे मैकूका प्रवेश)

मैकू—हां है। जो मोहराके [illegible] हो तो हमे नाहीं देत्यू।

(सब लोग हंसते हैं)

मोहिनी—अरे बेवकूफ, अच्छे उजड्डुसे पाला पडा है। हाथमे जूता लेकर क्यो आया ?

मैकू—(स्व०) हम सोचा पहिले लेत चली, थोड़ी देर बाद दर्कार पड़ब करी। (प्र०) खाली तो बैठा नाहीं रहेन। मालिक केर जुता चमकावत रहेन।

मोहिनी— जा हाथ धोकर बोतल और ग्लास लेआ। ज़रा जल्दीसे।

मैकू—(स्व०) हाथ धोयके, मानो गंगा जलै तो हैं। ई बखत सैतानका पुर जमघट लाग हौवै (प्र०) अच्छा (जाते २ फिर कर) मुदा कैस बोतल। ऊ····(हाथसे बतलाना)।

मोहिनी—हा-हा वही। (मैकूका जाना) अच्छे कम्बख्तसे पाला पड़ा है। (रामकिशोरसे) हा प्यारे, कोई अच्छा सा गाना सुनाओ।

रामकि०—जो हुकम (मैकूका आकर शराबकी बोतल और ग्लास रखना। सबोंका पीना, मैकूका जाना)।

रामकिशोरका गाना

प्रेम-घटा जब तन पर छाये,
जोबन बरसे मन लहराये॥
लहराये अंग-अंग हरियाली, हो जाये अखिया मतवाली।
नई नई डार नये पल्लव छाये, एक नई दुनिया बन जाये॥ प्रेम०
[illegible] कोकिला मन जगाये, तड़प-तड़प बिजली तड़पाये।
विपल रहे मन चैन न पाये, बह जाये डूबे-उतराये॥ प्रेम०

गौरी—वाह! वाह क्या कहने है।

(डन्कन उठकर जेबसे एक रुपया निकालकर रामकिशोरके सरपर घुमाता फिर जेबमे रख लेता है)

मोहिनी—हैं-हैं, यह क्या करते हो ?

डन्कन—कहीं बाबूको नजर न लग जाय। (रामकि० से) Well-done Babu! Well done!!

रामकि०—(जल्दीसे एक ग्लास शराब पीकर) अच्छा प्यारी, मुझे थोडी देरके लिये इजाज़त दो, मैं अभी वापस आ जाऊँगा।

मोहिनी—खैर, मैं जानेको नहीं मना करती। पर जल्द वापस आना, देर न लगाना। (रामकिशोरका उठकर जूता पहनना)।

गोरी—अरे यार ठहरो मैं भी चलता हूं।

रामकि०—मैं बाहर हूं तुम जल्दी आओ। (जाना)

डन्कन—लाओ बीबी हमारा हिस्सा।

गोरी—और हमारा भी।

मोहिनी—तो अभीसे क्यों मरे जाते हो। पहले काम तो फतह होने दो।

मोहिनी—ऐसी पट्टी पढ़ाई कि तोता पिंजड़ेसे उड़ ही नहीं सकता।

डन्कन—(आगे बढ़कर) My Love! My Love!!

मोहिनी—हैं-हैं, यह क्या करते हो। अगर कहीं देख ले तो सारा गुड़ गोबर हो जाय।

रामकि०—(लौटकर) गोरी बाबू।

ी—(डन्कनसे) चलो, नहीं तो खिसक जायगा। (ज़ोरसे) आया।

हिनी—साथ ही साथ रहना।

री—इसके लिये निश्चिन्त रहो (डन्कनसे) चलो।

न्कन—(मोहिनीको ओर बढ़ता है) My Love ! My Love !!

(गौरीनाथ हाथ पकड़ कर ले जाता है, डन्कन 'माई लव-माई लव' चिल्लाता जाता है)

मोहिनी—इन्हीं हथकण्डोंसे वेश्या अपना जीवन पालती हैं। सीधे-साधे, भोले-भाले लोगोंको फंसाकर, उनका सर्वस्व हड़प लेना ही चतुर वेश्याका काम है। हः हः, विचारा समझता है कि मैं सचमुच उससे प्रेम करती हूं। नहीं जानता, यह प्रेम नहीं—तेज़ ज़हरीली कटार है।

(पागलका नेपथ्यसे हसते हुए प्रवेश)

पागल—हः हः हः हः क्यों बीवीजान, आज तो बड़ी खुश मालूम होती हो। चलो, एक और असामी आ जुटा। खूब लूटो खसोटो! उसे बिना रास्तेका भिखारी बनाये चैन न लेना। यही तो तुम्हारा धन्धा है। धनी मां-बापके इकलौते बेटोंको अपनी तीरे-नज़रका निशाना बनाकर उनका खून पी जाना......धन्य है तुम्हारी जात! अनगिनती यारोंसे यारी गाठो फिर भी सदा सुहागिनकी सुहागिन! हः हः हः हः मैं कुछ न बोलूंगा, मैं कुछ न बोलूंगा.......

नोहिनो—पागल, यह क्या कहते हो। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो इस तरह मुझे बदनाम करते हो? मैं तो यों ही दुनियामें ठुकराई जाकर किसी तरह दुःखसे अपनी जिन्दगी काटती हूं। मैंने किसीका क्या बिगाड़ा?

पागल—ह: ह: ह: ह:, तुमने किसीका क्या बिगाड़ा? यह तो उनका कसूर है जो तुम्हारे पास आते हैं। कसूर तो उनका है जो अपने घरकी लक्ष्मीको ठुकरा कर तुम्हारा चरण-चुम्बन करते हैं। तुम खूब अपने रोजगारके तरक्कीमें लगी रहो, समझी। ह: ह: ह: ह:, मैं कुछ नहीं जानता (जाना)।

मोहिनी—न जाने किस मेहियेने जाकर इससे आजकी बातें कह दी। न। इसकी शनि-दृष्टि घरपर पड़ी है तब बचकर रहना सहज नहीं है। ओह! इसकी बातोंसे सिरमें चक्कर आने लगा। मैकू ओ मैकू। (मैकूका आना)

मैकू—का है?

मोहिनी—देख, अगर कोई आवे तो दरवाजेसे लौटा देना, मेरी तबीयत ठीक नहीं है, मैं सोने जाती हूं।

मैकू—ऊ जो ना बाबू आवें तबहु?

मोहिनी—हाँ। (प्रस्थान)

मैकू—धन्न तुम्हार माया! ऊ पगला ठीके कहत रहा। अरे ऊ तू निरवान होवे! ऊपर ते ढोंग बनाये रहत हैं पगलेका अस। ई, हमरे बापका का! एक दाई समझाव

दीन्ह, मनवो सुख पौवो न मनवो भरसाईमे जा.....
जाई ड्योढ़ीपर कुण्डी चढ़ाय आई।

दशम दृश्य

[स्थान—रास्ता]

(रामकिशोर और गौरीनाथका बातें करते आना)

गौरी—क्या बताऊं यार, समयकी बात है। जिन्होंने रुपये लिये हैं वे देनेका नाम ही नहीं लेते। नहीं तो इतनी 'हाय-हाय' की जरूरत ही न पड़ती।

रामकि०—तीन हफ्तेसे बांसवालेसे टालमटूल कर रहा हूं। आज अगर उसे रुपये न दूंगा तो सोलहो दण्ड एकादशी समझो। लेकिन उससे भी बड़ी एक मुसीबत सामने है। मेरे दोस्तके लड़केकी शादी है। आज शामको वे लड़की देखने जायगे। ललिताने चौदह रुपये दिये थे एक गिन्नी खरीदकर वहां देनेके लिये, सो तुमने दो घण्टेका फायदा कर ले लिया। अब बताओ मैं क्या करूं?

गौरी—तुम विश्वास नहीं करोगे रामकिशोर, डेढ़ सौ से ऊपर रुपये लोगोंमें पड़े हैं। पर कोई देनेका नाम ही नहीं लेता। दो महीनेसे ऐसी टानाटानीमें पड़ा हूं कि कुछ पूछो मत। नहीं तो सौ दो सौ रुपये तो हर वक्त पाकेटमें पड़े रहते थे।

रामकि०—पर इस समय मैं क्या करूं ?

गौरी—यार, तुम्हारी बीबीने तो कारबार खोल ही रखा है……
क्या अबतक बीस-पचीस रुपये भी न कमाये होंगे ?

रामकि०—पर उनके सामने अब कौनसा मुंह लेकर जाऊँ ?

गौरी—अरे यार, रहने भी दो। कौन बड़ी इज्जतदार है। चरखा कात २ कर सूत बेचना, जिस किसीसे मुंह खोलकर बेधड़क बातें करना, यह सब क्या भले घरकी औरतें करती हैं ?

रामकि०—वह जो भी करे मुझे इससे क्या ? जब मैंने उससे सारा सम्बन्ध तोड़ लिया है तब उसके भले-बुरे कामोंसे मुझे क्या वास्ता ?

गौरी—सुनो, एक बात कहता हूं। उस मोहल्लेके केशव लौण्डेपर मेरी मुद्दतसे नजर है। वह साला महा शरारती और बदमाश लड़का है। कहते डर लगता है, पर तुम्हारे भलेके लिये कहना ही पड़ता है। परकी साल ही देखो न, माल स्वदेशीके मामलेमें छः महीने जाकर जेल खट आया।

रामकि०—तुम डरो मत। जिसको मैंने दिलसे निकालकर बाहर फेंक दिया है उसके बारेमें तुम चाहे जो कहो, मैं बुरा न मानूंगा।

गौरी—अरे यह अपनी आंखोंसे देखा है। परसोंकी तो बात है। तुम्हारे घरसे वह बाहर निकला। उसके पीछे-पीछे

तुम्हारी श्रीमतीजी भी निकलीं। कपड़े सब इधर-उधर, सिर खुला हुआ ....उसका हाथ पकड़ कर भीतर ले गईं। और एक दिनकी बात सुनो। तुम्हारी बेग़म साहिबाने एक दिन उसे पान दिया। उसने कहीं नाहीं कर दिया। तुम्हारी श्रीमतीजीने एक हाथसे उसके दोनों हाथ पकड़े और दूसरे हाथसे जबर्दस्ती उसके मुंहमें पान खिला दिया। अरे, कहा तक कहूं.. तुम्हारी सती-लक्ष्मीके जो-जो काण्ड देखे हैं कि.. (रामकिशोर गिरने लगता है) यह क्या? यही कह दो कि बड़े कड़े दिलके हो?...जाने दो, गोली मारो ऐसी फ़ाहशा औरतको! ..बाबा, जो चीज दिलवा दी है कि भूल कर भी किसीकी याद न करोगे।

रामकि०—(स्व०) ओफ़! मेरी वही ललिता...अब समझ रहा हूं। स्त्रियोंका जितनी जल्दी पतन होता है, पुरुषोंका उतनी जल्दी नहीं होता।

गौरी—(स्व०) बातें असर कर गयीं! जैसे भी हो ललिताको उड़ाऊंगा, हजारोंमें एक है। (प्र०) क्यों, क्या सोच रहे हो?

रामकि०—नहीं, कुछ नहीं।

गौरी—मनमें तो यही समझो कि वह तुम्हारी कोई नहीं है। मौका, काम निकालनेके लिये वक्त पर गधेको भी बाप बनाना पड़ता है समझे? अब मैं चलता हूं बड़ा जरूरी

काम है। (स्व०) अब यहांसे खिसक देना चाहिये।
(जाना)

रामकि०—क्या करूं ? मोहिनीके यहां जाऊं ? पर उसने मैकू को जगानेके लिये मना कर दिया है। जगानेसे शायद नाराज़ हो जाय ! पर गिन्नी चाहिये ही। गिन्नी न देनेसे जन्म भरके लिये चोर बन जाऊंगा। गौरीकी तो बातें ही बातें हैं। अच्छा, ललिता क्या सचमुच अब वह ललिता नहीं रही ! उंह, मैं उसकी परीक्षा लेने नहीं जा रहा हूं। जाता हूं केवल रुपये लेने। फिर आकाश-पाताल क्यों एक करूं ?

एकादश दृश्य

[स्थान—ललिताका मकान]

(ललिता खाट पर बीमार पड़ी है, चारपाईके पास टेबुल पर दवा वगैर रखी है। पासमें केशव बैठा है)

केशव—ललिता, तुम दिनपर दिन सुस्त होती जा रही हो, किसी अच्छे डाक्टर को बुलाऊं ? मेरा मन कहता है बीमारी कठिन है, रोग भीतर ही भीतर बढ़ रहा है। सरकार साहूके पास तो गया था वे यहां नहीं हैं।

ललिता—नहीं नहीं, मुझे खासी-बेरामी कुछ नहीं है। हां, थोड़ी

कमजोरी है इसीसे उठ-बैठ नहीं सकती। तुम चिन्ता न करो, मेरे भागमें मौत नहीं है।

[illegible]व—मरोगी क्यों बहन ? तुम जिसके लिये मरने बैठी हो उसने तो किसीसे यह भी नहीं पूछा कि तुम हो या मर गयी हो। फिर किसपर अभिमान कर मरोगी बहिन।

ललिता—भैय्या, मेरा बची रहना एक विपद है मेरे लिये भी और उनके लिये भी। मेरे मरनेसे उनके रास्तेका कण्टक दूर हो जायगा और मैं भी...

पं[illegible]व—बहन, ईश्वरने तुम्हे इतना उच्च हृदय दिया है क्या नष्ट करनेके लिये ? एक स्वामीकी सेवाको छोड़कर स्त्रीका क्या और कोई कर्त्तव्य नहीं है ?

ललिता—जो सधवा हैं उनके लिये पति-सेवाको छोड़ कर संसारमें दूसरा कोई काम नहीं है।

पं[illegible]—और यदि पति-सेवा उनके भाग्यमें न हो ?

ललिता—तो मौत।

[illegible]—और कोई नहीं है ?

ललिता—है। और वह है सच्ची भावना लेकर मरना। जिससे [illegible] [illegible] पति-सेवाका सौभाग्य मिल सके।

[illegible]—तो बहिन दूसरा बड़ा सेवा-क्षेत्र पड़ा है। अनेकों सेवा-[illegible] हैं जिन्हें करके अक्षय स्वर्गका भागी बना जा सकता है।

ललिता—भैय्या, तुम भूलते हो। पति-सेवाको छोड़ कर कोई भी काम स्त्रीको अक्षय स्वर्गका भागी नहीं बना सकता।

केशव—निष्ठुर! तुम बड़े अभागे हो। सावित्री-सी पत्नी पाकर भी तुम....

ललिता—किसे क्या कहते हो?

केशव—अभी भी कहनेसे चोट लगती है?

ललिता—(आंखोंमें आंसू भरकर) भैय्या अगर...

केशव—मुझे क्षमा करो बहन, अब मैं कुछ न कहूंगा। लो, मेरे अनुरोधसे दवा पी लो। अंगूर लाया हूं थोड़ा-सा रस मुंहमें डाल लो।

(दवा पिलाना। नेपथ्यमें दाई पुकार कर कहती है—"रामकिशोर बाबू नामके एक भले आदमी आये हैं।")

ललिता—वे कहां हैं?

केशव—स्थिर हो बहन, मैं पूछता हूं (ज़ोरसे) वे कहां हैं?

(दाई-नेपथ्यमें—दर्वाजेपर खड़े हैं)

ललिता—अगर वे आना चाहें तो लिवा लाओ भैय्या। अकेले ही हैं या उनके साथ और भी कोई है?

केशव—तुम लेटी रहो मैं पूछता हूं। (ज़ोरसे) वे अगर अकेले हों तो उन्हें भेज दो।

ललिता—नहीं मुझे उठाकर बिठा दो—मैं बैठूंगी।

केशव—ललिता, तुम पागल हो गयी हो क्या! आज आठ दिनोंसे

तुमने कुछ खाया-पिया नहीं, बैठ भी सकोगी ? बहिन, मैं बाहर जाता हूं।

ललिता—तुम बगलवाले कमरेमें जाकर बैठ जाओ।

(केनवका जाना—रामकिशोरका आना)

ललिता—चले आओ।

रामकि०—अभी कोई बाहर गया है न ?

ललिता—हां।

रामकि०—कौन था ?

ललिता—क्या करोगे जानकर ?

रामकि०—(स्व०) जो सोचा था वही हुआ ! गोरी झूठ नहीं कहता था। चूल्हेमें जाय मुझे क्या ? (प्र०) तुम लेटी हो ?

रामकि०—अच्छा तो मैं सब लिये जाता हूं। तुम्हारे खर्चके लिये कुछ छोड़ दूं—पर क्या होगा? तुम्हे आजकल रुपयो की क्या कमी है! ओफ! तुम्हारे रोज़गारके रुपये भी लेने पड़े

ललिता—मेरा रोज़गार!

रामकि०—हा हा, तेरा रोज़गार—तेरी वेश्यावृत्तिका रोज़गार....

ललिता—ओ मा! (मूर्छित हो जाना)

(केशवका प्रवेश)

केशव—अब बिना एक शब्द बोले यहासे चले जाओ।

रामकि०—तू कौन?

केशव—मैं चाहे कोई हू, पर तुम्हारे जैसा नीच और अधम नहीं हू। याद रखो, आज तुमने एक सतीके कोमल हृदयको चोट पहुचाई है। तुम कभी शान्तिसे जीवन न बिता सकोगे।

(ललिताके पास जाकर उसकी आंखोंमें पानीके छींटे देना)।

रामकि०—अच्छा-अच्छा, पहले ललिताको देखूंगा उसके बाद तुझे।

केशव—जाओ।

ललिता—भैया-भैया!

केशव—बहिन-बहिन .।

द्वितीय अङ्क

प्रथम दृश्य

[स्थान—माधव प्रसादके मकानका अन्तर्भाग]

(पागलका हसते हुए प्रवेश)

पागल—हः हः हः हः ! मैं कुछ न बोलूंगा, कुछ न बोलूंगा।

लक्ष्मी—अरे मर ! न जाने सगुन-सुसाइतमे ये कहासे आ मरा। तू यहा क्यों आया ?

पागल—तुम्हारे घरमें व्याह है, तुम्हारी लडकीका व्याह है। वर सिरपर सेहरा बाधकर आयेगा। मैं कुछ नहीं जानता, मैं कुछ नहीं जानता। हः हः ! हः हः !!

लक्ष्मी—अरे ओ पागलराम ! मैं तेरे पैरों पडती हूं। तू उन लोगोंके सामने कुछ न कह बैठना, नहीं तो सब खर मण्डल हो जायगा। देख, तू यहासे अभी चला जा, मैं तुझे एक अच्छा-सा नया कपडा दूंगी।

पागल—हः हः ! हः हः !! अरे हाकिम खुद विचार करता है; वह रहीम-पेशकार नहीं मानता। मैं कुछ न बोलूंगा, मैं कुछ न बोलूंगा .....

लक्ष्मी—अरे मैं तेरे हाथ जोडती हूं। तुम फिर किसी दिन आना मैं तुम्हें भर पेट भोजन करा दूंगी। अभी यहांसे चले

तरहसे अच्छे ही हैं। लड़का अगर पढ़-लिखकर, आदमी बनकर लौटेगा तो मुझको सुख ही मिलेगा।

राजू—हां…और अगर सहजमें कोई सुयोग मिल गया तो पहली शादीकी बात छिपाकर, एक मेमसे शादीकर हिन्दुस्तान की कीर्ति भी बढ़ा सकेगा…क्यों न चाची? अच्छा चाची! चाचाजी क्या समझते हैं रुपया बरसातकी बूंदोंकी तरह आकाशसे बरसता है?

लक्ष्मी—तेरे चाचाजीने रुपये क्यों दिये हैं, यह मैं जानती हूं। पांच बरस लड़का अगर विलायतमें रहेगा तो वे पांच बरस और लड़कीको घरमें रख सकेंगे। इसी लोभसे तेरे चाचाजीने बारह हज़ार रुपये दिये हैं।

राजू—सर्वनाश! लड़कीको पांच बरस घरमें रखनेके लिये ऊपर-से यह बारह हज़ार रुपयोंकी [illegible]! चाची! सच-[illegible] बेचारे [illegible]

राजू—चाची, पहाड़ी तोता भी कोई तोता है और फिर उसकी बोली ?

लक्ष्मी—ना बेटा, ऐसी बात न कहो। तुम्हारे चाचा भागवान आदमी हैं। उन्हींके पुण्य-प्रतापसे मैं आज राजरानी बनी हुई हूं। तुम जो बात उनसे न कह सको, वह मुझसे कह दिया करो।

राजू—चाची, मेरा तो उन्होंने, पिछले साल देशमें ज़मीन खरीदनेके लिये हजार रुपये देकर, ऐसा मुंह बन्द कर दिया है कि मैं कोई बात ही नहीं कह सकता।

लक्ष्मी—हां, तेरे चाचा आगे कि नहीं। (प्रस्थान)

राजू—गुमाश्ता बनकर दिन-रात गधेकी तरह खटता हूं, पर सिवा महीने-महीने बँधी हुई तनख्वाहके ऊपरसे एक पैसा भी देन-लेनेका नाम नहीं। अब कैसे चटसे बारह हजार देनेके लिये राजी हो गये। माना कि ब्याहका काम है, रुपयोंका खर्च है। पर बनाने वाले तो मजेमे बना रहे हैं। अपने रामको तो झंझी-पाईसे भी भेंट नहीं...ठहरा तो भतीजा ही!

द्वितीय दृश्य

[स्थान—माधव प्रसादकी बैठक]

(माधव प्रसाद मोतीलालसे बातें करते हैं)

माधव—इस बार तो ज्यादा छुट्टी लेकर आये हो न ?

मोती—हां, तीन महीनेकी छुट्टी मिली है। एक महीनेकी With full pay और दो महीने की With half pay

माधव—बहू और कमलको नहीं लाये ?

मोती—घर अकेला था। फिर कमलका इम्तिहान भी नज़दीक है। यहां आनेसे उनकी पढ़ाईका हर्ज होता।

माधव—अरे भाई, इम्तिहान तो अगर इस साल न देता तो अगले साल भी दे सकता था। पर सुरूका ब्याह तो बार बार न होगा। परदेशमें बहूको अकेली छोड़कर आये हो। कोई देखने-सुनने वाला भी है या नहीं ?

मोती—हां, भगवान है।

सोचेंगे कि सब भाग गये और अगर वे कहीं उसी समय नालिश कर असबाब-पत्तर कुड़क करा लें तो बड़ी आफ़तमे फंस जाऊँगा।

[illegible]—हूं, तो तुम्हारी ही इच्छा नहीं है कि बहू और कमल आवे, अच्छा !

[illegible]—भैया, आप बात तो समझते नहीं, उल्टे नाराज हो जाते हैं।

[illegible]—नाराज होनेकी क्या बात है ? अब तुम्हे परदेशमे रहनेकी कोई जरूरत नहीं है। यहीं छोटा-मोटा कोई रोजगार करा दो, रुपये मैं लगा दूंगा। मुझे ससुराल चली [illegible] गुना हो जायगा। तुम्हारी भाभीकी तबियत घबराती। बहू और कमलके रहनेसे जी बहला रहेगा। [illegible] ?

हिन्दी के सुप्रसिद्ध नाट्यकार एव राष्ट्र-कवि

श्री० पं० माखन शुक्ल
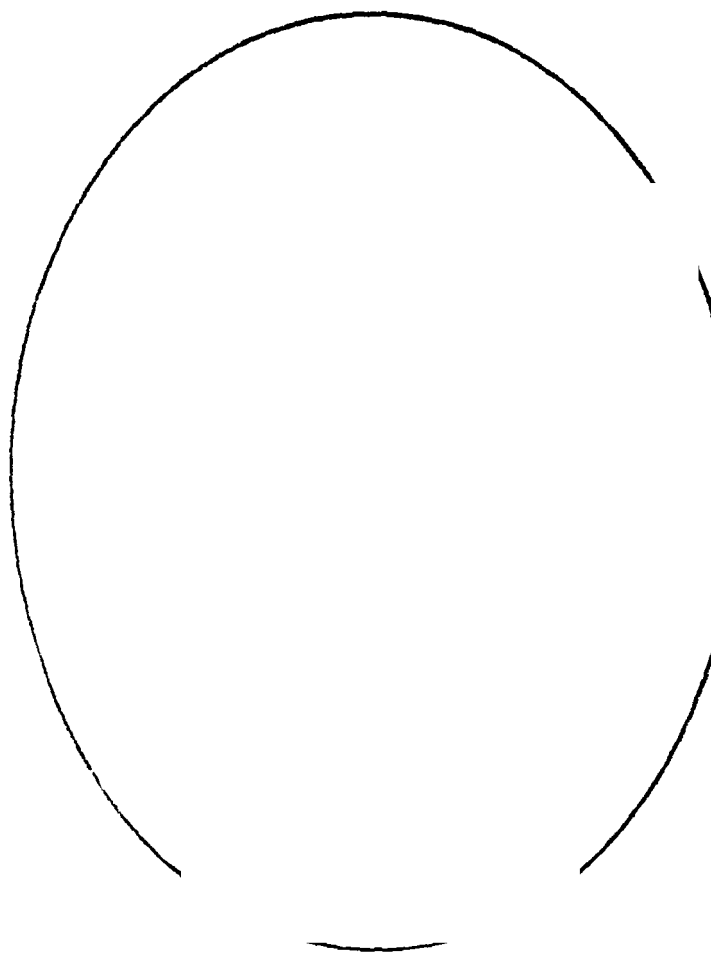
माधव—हाँ हाँ कहो।

मोती—इतने रुपये जो आप व्याहमें खर्च कर रहे हैं सो किसके लिये ? यह भाभीके पेटकी लडको है या मेरी ! आपके रुपयां और सम्पत्तिपर मेरा कोई लोभ नहीं है और न मुझमे कोई जलन है। दो-तीन हजार खर्च करनेसे भी तो काम बन जाता।

माधव—(कांप कर) मोती तुम जानते हो मैं अपने मनकी करता हूं। किसीसे सलाह-मशवरा लेना माधव प्रसादके स्वभावके बाहरकी बात है। सुरु जिस दिनसे इस घरमें आई, उसी दिनसे मेरी चारों ओरसे उन्नति-ही-उन्नति हुई है। सुरुके व्याहके सम्बन्धकी कोई बात न कहना ही तुम्हारे लिये बुद्धिमानीकी बात होगी। (प्रस्थान)

मोती—भाई साहब रुपयोंके जोरसे लडकीकी असलियत दबा देना चाहते हैं। पर यह कलकत्ता शहर है। देखता हूं उन्हें रुपयोंका कितना घमण्ड है। (सामने लक्ष्मीको आते देखकर) यह लो, भाभी साहिबा आ रही है। ऊपरसे कैसी भोली बनी है, पर भीतर जहर भरा है। (लक्ष्मीका

दिया है, वहां अगर एक लड़का-लड़की भी दिया होता तो कितना अच्छा होता !

लक्ष्मी—ऐसी क्या जरूरत है बाबू साहब, मेरे कमलको भगवान सुखी रक्खे मेरे लिये वही सब कुछ है, वही वंशका उजाला है। ईश्वर माताओंको, उनके हृदयमें जितनी माया-ममता भरकर संसारमें भेजते हैं, वह मेरी सुरूको देकर उन्होंने मा होनेकी मेरी सारी साध पूरी कर दी है।

मोती—देखो भाभी, इसी बारेमें मैं तुमसे दो-चार बातें करना चाहता हूँ। तुम्हारे पुण्य-प्रतापसे आज भैया इतने बड़े आदमी हैं नहीं तो वे साठ रुपये महीना पानेवाले कमसरियटके मामूली नौकर ही थे। भाभी, यदि सच पूछो तो भैयाके ही पापोंके कारण तुम्हें ....

लक्ष्मी—यह तुम क्या कहते हो बाबू साहब ? ऐसी बातें मुँहसे न निकालो। पति-निन्दा हिन्दू-नारी नहीं सुन सकती। पर स्वामी मनुष्य नहीं रहता है ...

मोती—तुम्हारे लिये देवता हो सकते हैं, पर तुम हम आदमियोंका मुँह नहीं बन्द कर सकती।

लक्ष्मी—बाबू साहब, जो असली बात हो, सीधी सादी भाषामें कह डालो। इतनी लम्बी-चौड़ी भूमिका बाँधनेकी क्या जरूरत है ? जरा सुनूँ, क्या बात है ?

मोती—बात क्या है ? तुम भगवान क्या समझ रही हो ? यह

कलकत्ता शहर है। ऐसे-ऐसे न जाने कितने अनगिनती रायबहादुर गली-गलीमे भरे पड़े हैं। दो-चार लाख रुपया भी कोई रुपया है ! अरे रास्तेमें पड़ी लड़कीको पाल-पोस कर बड़ा किया, ठीक है। उसके लिये इतनी टीम-टाम क्यों ? सुरु मेरी लड़की है या भाई साहब की ? जहा दो-तीन हज़ार खर्च करनेसे काम बनना—वहा खर्च होंगे बीस हजार ! यह भैयाकी कितनी बडी वेवकूफी है। तुम उनकी स्त्री हो इसलिये तुमको समझा देना मैंने अपना फ़र्ज समझा।

लक्ष्मी—बाबू साहब, तुम मा-जाये भाई हो। और मुझे उन्होंने सिर्फ़ दो मंत्र पढकर अपनाया है। व्याहके दूसरे दिन पतिके साथ ससुराल आती समय, मा-बाप लड़कीके कानमें एक मन्त्र कह देते हैं। वही स्त्री-जातिका मुक्ति-मन्त्र है। जानते हो वह मन्त्र क्या है ? केवल चार अक्षरोंकी एक बात—'पति-सेवा'। जो स्त्री अपने पतिको ईश्वर मानकर उनको पूजा करती है—संसारमे उसका कुछ भी असफल नहीं होता। बावू साहब, मैंने उसी मन्त्रकी सिद्धि पाई है, मै बडा आदमी नहीं बनना चाहती।

सीता—[illegible] भैयाके साथ रहनेसे तुम्हारी बुद्धि भी ठीक उन्हींकी तरह हो गई है। जरा सोचो, भगवान न करे कलको कोई दुर्घटना हो जाय ([illegible] कांप उठना) तो

तुम्हे रास्तेमे खड़ी होना पड़ेगा...अभी तुम राजरानी हो किन्तु भैयाके न रहनेके बाद अगर तुम्हे दूसरोंकी रसोई बनाकर पेट भरना पड़े वह मैं इन आखोंसे कैसे देख सकूँगा ? भाभी, ऐसी फिजूलखर्चीका ऐसा ही परिणाम होता है। उस समय तो मैं अपनी स्त्रीको मालकिन बनाकर तुम्हें उसके अधीन रख नहीं सकूँगा। भाभी दुनियामे मोतीलाल किसीसे नहीं डरता—डरता है तो केवल धर्मसे। धर्मका भय अगर न होता भाभी, तो तुम देखतीं—आज मेरी स्त्रीकी भी कई बक्से गहनोंसे ठसाठस भरी होतीं। ऊपरी आमदनीका कौन भरोसा है वह तो चोरी है चोरी भैया .

[illegible]—[illegible] भाई साहब, मेरा जी न जाने कैसा होने लगा। मैं [illegible]को खोकर धन-सम्पत्तिकी मालकिन नहीं बनना चाहती। मैं स्वामीको इष्ट-देवता मान कर पूजा करना चाहती हूँ। मैं उनके पैरोंपर सिर रखकर उनके सामने ही मरूँगी। और यह आकांक्षा लेकर मरूँगी कि अगले जन्ममें—चाहे लखपतीके घर जन्मूँ या [illegible], तुम्हारे भैयाके समान ही स्वामी पाऊँ। आज आते-आते तुमने अपनी बातोंसे मुझे बड़ी चोट पहुँचाई है। ([illegible])

[illegible]—[illegible] [illegible] आजकल [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सकते है—मोतीलाल नहीं। भाई! लोग कहते हैं भाईसे बढ़कर दुनियामे कोई चीज़ नहीं। हैं तो भाई, कैसे भले हैं! सगे भाईको कौड़ी न दिया और पराई लड़की पर लाखा लुटा रहे हैं। (राजूका प्रवेश) अरे राजू, कहा गया था? कितनी देरसे तेरे लिये खड़ा हू।

राजू—अगर ऐसा जानता तो अधेलेकी रेवडी लेते आता।

मोती—ओ बेवकूफ़ अपनी बेवकूफी रहने दे और कामकी बात सुन। मैया कहा है जानता है?

राजू—बैठकमें शोभाराम जौहरीको सुलके गहनोका आर्डर दे रहे हैं और पास ही बुद्धूमल रुपयोंकी थैलो खोलकर लोगों को रुपये दे, दस्तूरीके रुपयोंसे अपनी टेंट गरम करते जाते हैं।

मोती—तू भी कुछ कमाना चाहता है बोल? चुटकी बजाते हज़ार रुपये बना सकता हूँ। (राजूके हाथमें चेक-बुक देखकर)

मोती—बस तू लडकेवालेसे इतना जाकर कहदे कि लड़की नीच जातिकी है, माधव प्रमाद धोखेसे शादी कर रहे हैं।

राजू—पर·······अगर चाचाजीको मालूम हो गया तो कहींका न रहूंगा।

मोती—मैं भी तो तेरे साथ चलता हू। रास्तेमें सब अच्छी तरह समझा दूंगा।

राजू—अगर रुपये मिले तो....

मोती—उसके लिगे निश्चिन्त रह। हज़ार क्या उससे भी ज्यादा मिलनेकी उम्मीद है। आ, रास्तेमें बातें होंगी।

तृतीय दृश्य

[स्थान—माधव प्रमादके मकानका अन्तःकक्ष]

(आगे-आगे माधव प्रमाद पीछे-पीछे मुनीम बुद्धमलका हाथमें बही लिये हुए प्रवेश)

मुनीम—बाबूजी, हिसाब तयार है सही कर दीजिये। (माधव [illegible] सही करते हैं) रुपया बैंकमें भेज दूं या अपने पास रक्खूं?

माधव—बैंकमें भेजकर क्या होगा? अपने पास ही रक्खो, [illegible] [illegible] तो [illegible] है।

मुनीम—जो आज्ञा (जाना)

[illegible] ([illegible] जाना)

[illegible] — [illegible]) [illegible]

का चपरासी दे गया है। मालूम होता है फिर कोई नई फ़रमाइश लिख भेजी है।

माधव—(पत्र पढ़कर) ऐं ! सुरुकी मा……यह क्या हो गया ! यह कैसा सर्वनाश…मेरा सर्वनाश किसने किया !

लक्ष्मी—अरे इतनी देरमें क्या हो गया ? कोई अशुभ बात तो नहीं है ?

माधव—मेरा सर्वनाश हो गया। सुरुकी मा, मेरा सर्वनाश हो गया। किसीने जाकर लड़के के बापसे कह दिया कि लड़की मरी नहीं है। ब्याह तो दूरकी बात रही, जाति-नष्ट करनेका दावा दायर करनेके लिये उन्होंने यह वकीलकी चिट्ठी भेजी है।

लक्ष्मी—धीरे बोलो घरमें और आदमी हैं, सभी सुनेंगे। सुरु भी सुनेगी। चिट्ठीमें क्या लिखा है, कुछ बताओ भी ? (जाकर किवाड़ बंद कर आना)।

माधव—मेरे किसी अपने आदमीसे उन्होंने सुना है कि लड़की [illegible] जातिकी है। सुरुकी मा, अब मैं क्या करूं ? [illegible], गलेमें रस्सी लगा लूं या गंगाजीमें डूबकर प्राण दे दूं।

लक्ष्मी—[illegible] घबरानेसे कैसे काम चलेगा ! उससे [illegible] है। उसी दिन, उसी लगनमें [illegible] ब्याह करूंगी। तुम सोच [illegible] सिरकी क़सम।

माधव—दो-चार हजार और देनेसे वे न मान जायेंगे सुरुकी मा?

लक्ष्मी—झाड़ू मारो ऐसे घर पर! तुमने अगर फिर मेरे सामने उनका नाम लिया तो मैं सिर पीट लूंगी।

माधव०—सुरुकी मा, सुरुके कोमल हृदयमें ज़रा भी चोट पहुंचनेसे मैं न बचूंगा।

लक्ष्मी—कैसी उलझनमें जान पड़ी है! तुम मर्द क्यों हुए? तुम्हें तो औरत होना था। ऐसी कौन सी बड़ी बात हो गई जिसके लिये तुम इतने अधीर हो रहे हो। कितनी ही बरातें दरवाजे पर आ-आकर लौट जाती हैं, भारे धूमका लड़का पीढ़े परसे उठा लिया जाता है इससे क्या लड़कियोंका ब्याह नहीं होता?

माधव—मैं तो यह समझता था संसारमें मेरा कोई शत्रु नहीं है। और तो कोई यह बात जानता नहीं था सुरुकी मा?

लक्ष्मी—जाननेवालोंमें हैं बाबू साहब और राजू। राजू तो जानता भी नहीं था, तुम्हींने उसे एक दिन बतलाया था।

माधव—हे ईश्वर! ऐसा भाई एक [illegible] कभी ऐसा [illegible] कर सकता है? मैंने तो सोचा कि [illegible] कोई [illegible] स्वीकार नहीं किया। और राजू ..... नहीं नहीं [illegible] नहीं कर सकता। वह बिचारा दुनियामें [illegible] [illegible] [illegible] और फिर [illegible]

कहते-कहते पागल हो जाता है। मैंने उसे अपनी विलमें महाजनी टोलाका मकान और दस हजार रुपयोंका सरकारी कागज देनेको लिखा है। नहीं नहीं सुरुको मा, यह काम किसी और बेईमानका है।

लक्ष्मी—तब मैंने किया होगा या तुमने।

माधव—मेरा सारा सुख-स्वप्न क्षणभरमें नष्ट हो गया!

लक्ष्मी—चलो, चलकर नहाओ-धोओ। सुरुके लिये वर ठीक कर तब मैं पानी पिऊंगी।

माधव—इसी लगनमें उसका ब्याह हो सकेगा?

लक्ष्मी—क्यों नहीं होगा? भात छितरानेसे कौवोंका अभाव, रुपये लुटानेसे वरोंका घाटा? मैं सुरुके वजनके बराबर रुपये दूंगी। सिर्फ यही नहीं, लड़के और लड़के बापसे सारी बातें तय कर तब ब्याह करूंगी। देखूं कौन ब्याह रोक सकता है?

भी न लगेगी। चलो, तुम्हारी पूजाका वक्त बीता जाता है।

माधव—क्या पूजा-पाठ करूं, मन तो स्थिर नहीं है!

लक्ष्मी—यही तुम्हारा गीता पाठ है? दूसरोंको उपदेश देते समय तो ज़बान नहीं रुकती और एक ज़रा सी बात पर युद्ध……

माधव—सच कहो मा, आज तुमने मुझे नरकमें गिरनेसे बचा लिया। श्रीकृष्ण ही रक्षक हैं-निखिल-ब्रह्माण्डके पालक हैं। "त्वया हृषीकेश हृदिस्थितेन-यथानियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।"

(लक्ष्मी और माधवप्रसादका प्रस्थान)

(रामूका प्रवेश)

चिर-शिथिल हिन्दी नाट्य-कला के जीवन-दाता,

अनेकों हिन्दी नाट्य-संस्थाओंके प्रतिष्ठाता,

अगणित आदर्श पात्रो के विधाता,

शिक्षित युवकों, विद्यार्थियो तथा विद्यार्थिनियोंको भ[illegible] नाट्यकलाके [illegible]

तथा प्रोत्साहन-प्रदाता

स्वयं नाट्य-मूर्ति

हिन्दीके प्रसिद्ध राष्ट्र-[illegible]

पूज्य पिताजी

न कर दे, तब तक तू जलको गो-रक्तके समान समझ। यदि न कर सके तो चाचाजीसे सारी बातें खोलकर कहदे।…· ठीक है, यही करूंगा। या तो सुरुके लिये वर ठीक कर जल ग्रहण करूंगा-नहीं तो चाचाजीके चरणोंमें लिपटकर उनसे अपने दुष्कर्मोंके लिये क्षमा माग, सदाके लिये अपना मुंह कालाकर कहीं चल दूंगा। और मोतीलाल·· चोर, शैतान, मा-जाया शत्रु ! एक मूर्ख, बुद्धिहीन मनुष्यके मनमें हजार रुपयोंका लोभ उत्पन्न कर उससे महापाप करानेवाला नीच ! राजू आजसे तेरा शत्रु है। तेरे पापोंका प्रायश्चित मेरे हाथोंमें है —उस विचार-पतिके सामने तुझसे समझूंगा !

चतुर्थ दृश्य

[स्थान—रास्ता। रामकिशोर गौरीनाथ]

रामकि०— मुझे अब झूठी आशायें मत दो। मोहिनी मेरे साथ ऐसी [illegible] करेगी, इसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं [illegible]।

गौरी०—[illegible] विचारीका क्या दोष? सारी कारस्तानी तो उसी [illegible] की है। हजार दो हजार तक भी होता तो [illegible] पर यह दस हजारका धक्का……

[illegible] [illegible] किसने सुनाया?

गौरी—तुझे क्या मालूम जिसने भुनाया पर भुनाना एक तरहसे अच्छा ही हुआ। क्योंकि, तुम्हारी स्त्री अगर बदमाशी कर अदालतमें दरख्वास्त कर देती तो खाना तलाशी लेते समय कागज बरामद हो जाता, साथ ही तुम भी [illegible] जाते। और अन्तमें Unsound mind [अनसाउण्ड माइण्ड] कह कर मुझे medical certificate [मेडिकल सार्टिफिकेट] देकर तुम्हें छुड़ाना पड़ता। [illegible] पास है इसीसे तुम पर कोई [illegible] आ सको। नहीं तो मामला बड़ा बेढब हो [illegible]।

रामकि०—अच्छा गौरीनाथ, तुम्हारे कहनेसे मैं दो दिन और ठहरूंगा। हालांकि मैं अच्छी तरह जानता हूं, तुम दो दिन बाद क्या जवाब दोगे। मैं हमेशा अपनी दवा पाकेटमे लिये फिरता हू।

गौरी—कैसी दवा ? किस डाक्टरका नुसखा है ?

रामकि०—मैनटन कम्पनी का (पिस्तौल निकालना)।

गौरी—हांय नापरे, जेबमे रक्खो, जेबमे रक्खो। पागल हो गये हो क्या ?

रामकि०—पागलसे भी ज्यादा। अच्छा गौरीनाथ, परसों इसी जगह मिलूंगा। मैं मौतको गले लगा लूंगा, पर हथकड़ी न पहनूंगा।

ही मिलेंगे। जाओ रातमे मिलना (रामकिशोरका जाना) इसके बाद में ललिताको देख लूंगा, कितनी बड़ी सती है .....

पंचम दृश्य

[स्थान—रास्ता ।]

किसी दूर देशमें जाकर मियां-बीबीकी तरह रहा जा सकता है। उसके बाद यह मामला ठण्डा होने पर ललिता पर हाथ साफ करूंगा।

षष्ठम् दृश्य

[स्थान—माधव प्रसादका मकान]

रामकि०—सुरू, मैं दिन-रात तुम्हारे कमरेमें बैठा गाना सुना करता हूं। तुम्हारी अम्मा और बाबूजी बिगड़ते तो नहीं?

[illegible]—बाबूजी तो खुद ही गाना सुनना पसन्द करते हैं।

रामकि०—फिर भी, मैं घर-जमाई हूं। बाबूजी और अम्माका मन [illegible] चाहिये।

पात्र-परिचय

(पुरुष)

रामकिशोर ... अस्थिर-चित्तका शिक्षित युवक

कामताप्रसाद ... रामकिशोरका धनाढ्य किन्तु कृपण श्वसुर (ललिताका पिता)

माधवप्रसाद ... धर्म-भीरु धनाढ्य सद्गृहस्थ

मोतीलाल ... माधवप्रसादका स्वार्थी भाई

पागल ... ?

रामनाथ ... कामताप्रसादका उदार-हृदय मुनीम

राजू ... माधवप्रसादका दूरके रिश्तेका भतीजा

केशव ... सच्चरित्र देश-भक्त युवक

गौरीनाथ ... धूर्त, स्वार्थी एवं चरित्र-भ्रष्ट युवक

डंकन ... असली जाति और नाम छिपाकर साहबी ठाट-बाटमें रहनेवाला एक नम्बरका जुआड़ी

मैकू ... मोहिनीका गंवार पर स्वामि-भक्त नौकर

सुद्धू महराज, डाक्टर, नौकर इत्यादि ।

(स्त्री)

लक्ष्मी ... माधवप्रसादकी कर्त्तव्य-परायणा स्त्री

ललिता ... रामकिशोरकी पति-परायणा स्त्री (कामताप्रसादकी कन्या)

सरस्वती .. माधवप्रसादकी पालिता कन्या

मोहिनी ... वेश्या

सखिया, दाई, इत्यादि ।

सरस्वती—हां, हां और बनाओ, और बनाओ !

रानडि०—गाओ प्यारी !

सरस्वतीका गाना

क्या सुन्दर मुखड़ा प्यारा।
निरखत रहूं, यही मन चाहत, मनहर रूप तुम्हारा॥
मीठे नैन, मधुर मुस्काहट, कैसा जादू डारा।
भूल गई सुध-बुध सब तनकी, सर्वस तुम पर वारा॥

सरस्वती—कैसा लगा ?

रानडि०—कैसा लगा यह समझ तो रहा हूं, पर प्रगट नहीं कर सकता।

होनेसे रुपया पेरिस वापस चला जायगा। तुम मेरा विश्वास करो, मैं खुद तुम्हे यहां तक पहुंचा जाऊंगा। दस बज गये। जरासी गफ़लतके कारण व्यर्थमें इतनी बड़ी रकम हाथसे निकल जायगी।

ललिता—अच्छा ठहरिये। मकान मालिकनसे कहकर अभी आती हूं।

ब्राह्मण—न-न, ऐसी गलती कभी न करना। तुम सिर्फ उनसे इतना कह दो कि मायके जा रही हूं—घंटे-दो-घंटेमें वापस आ जाऊंगी, बस। सिर्फ एक चद्दर ओढ़ लो। भगवान ने इस मुसीबतके समय तुमपर बड़ी दया की है। (घड़ी देखकर) ओहो! बातकी-बातमें ११ बज गये....जल्दी करो नहीं तो देर हो जायगी।

ललिता—अच्छा आप बाहर ठहरिये, मैं आती हूं। (जाना)

ब्राह्मण—देखता हूं अब कहा बचकर जाती है, (ललिताका चद्दर ओढ़ कर आना) चलो।

(दोनोंका प्रस्थान)

अष्टम दृश्य

[स्थान—मोहिनीका मकान। मोहिनी और मैकू]

मोहिनी—सब कुछ चला गया। इन्कनका रुपया, मेरी गहनोंवाली बक्स, नगद रुपया-पैसा जो कुछ था, लुटेरोंने पिस्तौल दिखाकर सब छीन लिया। न चिह्न मिला, न